नुष्य बनो

शुभ संकल्प

प्रेम

ब्रह्मचर्य पालन

फकीर चन्द जी महाराज

ता मन्दिर होशियारपुर (पंजाब)

'मनुष्य बनो' के नियम

१—शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिकता के नियमों का वास्तविक दृष्टिकोण से प्रचार करना और प्रेम, सभ्यता, आदर, शिष्टाचार, सदाचार सहनशीलता और संयम की शिक्षा देना इसका मुख्य उद्देश्य है। मनुष्य बनना और बनाना।

२—सन्त महात्माओं और ऋषियों की वाणी को सरल, सुबोध और साधारण भाषा में प्रचार करना।

३—सामाजिक उन्नति कारक तथा देशहित कारक लेखों को भी स्थान दिया जायगा।

४—किसी धर्म, पंथ या सम्प्रदाय के खण्डन सम्बन्धी लेख नहीं छापे जायेंगे।

५—यह पत्र प्रत्येक मास की १५ तारीख को प्रकाशित हुआ करेगा।

६—लेखों के घटाने बढ़ाने और छापने न छापने का अधिकार सम्पादक को होगा। लेख सम्पादक के नाम भेजे जाँय।

७—ग्राहकों को पत्र लिखते समय ग्राहक नम्बर व पता साफ साफ अवश्य लिखना चाहिये। उत्तर के लिये जबावी कार्ड आना चाहिये वी० पी० पी० से पत्रिका नहीं भेजी जायगी। इसका वार्षिक मूल्य ६—०० है।

८—यदि किसी मास का पत्र ठीक समय पर न पहुँचे तो पहले अपने यहां डाकखाने से पूछताछ करके वहां से जो उत्तर मिले व अगला अं निकलने से एक सप्ताह पूर्व तक कार्यालय में पहुंचने पर ही दूसरी प्रा बिना मूल्य भेजी जा सकेगी।

९—प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र, ग्राहक होने की सूचना, मनीआर्डर आदि मैनेज के नाम से भेजने चाहिये। मनीआर्डर कूपन पर अपना पता साफ स लिखना चाहिये। और पते की तबदीली भी।

प्रकाशक

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं: पूर्णात्पूर्ण मदुच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेवावशिष्यते ॥

मनुष्य बनो

वर्ष २८ | फागुन सं० २०३४ वि० मार्च, १९७८ | संख्या ६

सुमिरन

जब तुम्हें चिन्ता सतावे, गुरु का तुमको ध्यान हो ।
मिट रहे अज्ञान पल छिन में, जो सच्चा ज्ञान हो ॥
दुख में संकट में विपत में, सोच में चिन्ता में भी ।
नाम का सुमिरन सदा हो, नाम का अनुमान हो ॥
सोते उठते बैठते और, खाते पीते जागते ।
गुरु को अपने पास समझो, परिचय का परमान हो ।
कौनसी आपत है जो, टाले नहीं टलती कभी ।
नाम है हथियार जानो, तुम नहीं अनजान हो ॥
राधास्वामी की दया से जब शरण तुझको मिली ।
कुछ दिनों अभ्यास पीछे, जीते जी निरवान हो ॥

—•—

धन्यवाद

श्रीमती वी० के० भारद्वाज, मेरठ । ११) रु०
श्री राम किशन मिस्त्री, रंगवासा इन्दौर । १:) रु०
श्री भँवरलाल गार्गीया, व्यावर (राजस्थान) ११) रु०
श्रीमती बुधवती देवी, भीलवाड़ा (राज०) ११) रु०

उपर्युक्त 'मनुष्य बनो' के प्रेमी प्रेमिकाओं का हार्दिक अभिनन्दन करते हैं तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं ।

सफेद दाग से दुखी क्यों ?

प्रिय भाइयो और बहिनो ! औरों की भांति अधिक प्रशंसा नहीं करता हमारी सफेद दाग नाशक आयुर्वेदिक दवा से लाखों रोगी अच्छे हो रहे हैं । अब तक किसी को निरास नहीं होना पड़ा है । आप भी एक फायल दवा मुफ्त मगा लें ।

उमा आयुर्वेदिक भवन (१)
पो० लाल विघा (गया)

सफेद बाल काला

खिजाब से नही, हमारे आयुर्वेदिक तेल से बालों का पकना रुक कर सफेद बाल जड़ से काला हो जाता है । यह तेल दिमाग और आंखों की कमजोरी को दूर करता है । हजारों मनुष्यों ने व्यवहार किया और लाभ उठाया है । मूल्य ११) फुल कोर्स ३०) रु० ।

उमा आयुर्वेदिक भवन (म०)
पो० लाल बीघा (गया)

स्त्री-पुरुष के गुप्त रोंगों पर मुफ्त सलाह

शादी से पहले या बाद शरीर में कमजोरी महसूस होती हो बचपन के गलत कार्यों या बुरी संगत में रह कर जीवन निराशा से भर गया हो, स्वप्न दोष के साथ पोषक द्रव्य आते हों, तो अपनी खोई हुई जवानी और ताकत प्राप्त करने के लिए रोग विवरण भेजें । स्त्रियां भी अपने गुप्त रोग के बारे में लिख सकती हैं । पत्र गुप्त रखा जाता है ।

उमा आयुर्वेद भवन (म०)
पो० लालबीघा (गया)

गुरू वन्दना

दोहा-- गुरु महा माला रतन, जग में बड़ा न कोय।
गुरु बिन होवे तरन ना, लाख यतन कर कोय ॥
सन्तों की महिमा अगम, पा न सके को पार।
यही रूप भगवान का बोलो जय जयकार ॥

चौवला—बोलो जय जयकार श्री गुरू फकीरचन्द गोपाल।
श्री कृषक भंडार देवी के रखू चरण में भाल ॥
रखू चरण में भाल दास की यही अर्ज भारी।
लेना अपनी शरण गुरूजी सम्मुख खड़ा अनारी ॥

दौड़— नमो गुरू अवतारण जगत भव कष्ट निवारण।
भानु सम ज्योति विशालं
चमके चम-२ तेज प्रेमयुत करत मंगल प्रति पालं।

दोहा— ओम नमः फकीरचन्द जी गुरुवर दीन दयाल।
बसत जहाँ हुशियारपुर मन्दिर मनुज विशाल ॥

आरती—ओम जय राधास्वामी, स्वामी जय राधास्वामी।
दुख विनासन हारे तुम अन्तरयामी।
जग में ज्योति निराली महिमा सन्तन की।
चरण कमल का सेवक राखो लाज जन की ॥
खड़ा हूँ सनमुख स्वामी अरज करूँ तिहारी।
लेउ शरण गुरू अपनी आस करी भारी ॥
तुम दीनन हितकारी मैं हूँ खल कामी।
कृपा सिन्धु सुख सागर दीन पती स्वामी।
जिसने तुमको दया था प्रेम मृदुल वानी।
सफल भये सब कारज पार ब्रह्म ज्ञानी।
करे वन्दना मंगल जय राधास्वामी।
भव वन्धन से तारो पाप हरो स्वामी ॥

Grams : 'Gwalior Textiles'

Gwalior Textiles

Dealing in :-

POLY AIR, TOEEN & GEVARDEEN

38-B, Majlis Park, DELHI-110033

Wanted Agent

Wanted Agents (Male/Female) Candidates do this work at own Area Salary Rs. 300/-, Commission and T. A. Extra.

QUALIFICATION :—Candidate should be minimum Matric or Higher Secondary.

AGE :—16 to 45 years.

Sent applications only in Hindi or in English. Registered letter at following address. :—

Gwalior Textiles,

38-B, Majlis Park,

DELHI-110033.

सतसङ्ग

हुजूर परमसंत परमदयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

ता० ८-१-७८

जग का खेल है मन की लीला मन की समझ न आई ।
मन के विषय विकार में भूले मन हीं भया दुखदाई ॥
मन से ऊँचे चढ़े जो प्रानी बूझे सतगुरु जाना ।
बूझ-बूझ गुरु ज्ञान की महिमा सूझे पद निरवाना ॥
हृद पर बैठ कहा सतगुरु ने चढ़ बेहद की घाटी ।
चेला हद बेहद जब लांघा उड़ी भरम की टाटी ॥
हद में दुख बेहद में सुख है अनहद पद निरवाना ।
हद बेहद अनहद जब लांघे मेटे आना जाना ॥
गुरु की दया साधु की संगत उत्तम गति मति पावे ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी भर्म भव जाल न आवे ॥

राधास्वामी ! दोस्तो ! मेरी उमर इस सन्त मत में गुजर गई, यह नई चीज थी, जो हमारे हिन्दुओं में नहीं थी, बिलकुल नई चीज थी । मैंने प्रण किया था, अपना अनुभव कह जाऊँगा । परसों यह शब्द सुना था तो ख्याल आया था कि तुझे क्या मिला फकीरचंद ? गुरु बन गया, सतसंग कराता है, चूँकि मैंने प्रण किया था, अपना अनुभव कह जाऊँगा और दाता ने कहा था तालीम बदल जाना इसलिये मैं यह काम करता हूँ :—

जग का खेल है मन की लीला मन की समझ न आई ।
मन के विषय विकार में भूले मन ही भया दुखदाई ॥

मैं सुख की तलाश करता था । मेरा अपना ही मन था, जो मुझे दुखी करता था, उस समय तो मुझे पता नहीं था, कि मन कैसे दुखी करता है, अब मैं समझता हूं कि मन का ही यह सारा खेल था । अब मैं मन के रूप

को समझ गया ! और केवल तुम लोगों की दया से जब से यह पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मेरा रूप लोगों के अन्तर दवाइयां बता जाता है, परचे हल करा जाता है, यह कर जाता है वह कर जाता है और मैं नहीं होता ! तो मुझे विश्वास हो गया कि यह जितना खेल है, यह सब हमारे मन का है । यह मन ही गुरु बनता है, मन ही चेला बनता है मन ही भक्त बनता है, मन ही भला बनता है, और मन ही बुरा बनता है ।

इससे छुटने का कोई उपाय है ? जब तक हम मन में फँसे हुये हैं अर्थात मन के रूप को नहीं जानते उस समय तक हम दुख से बच नहीं सकते, कोई भी हो, सन्त हो, परम सन्त हो, महात्मा हो, परम आत्मा हो, लोगों को उपदेश करने वाला हो, जब तक हम इस मन के रूप को नहीं समझते तब तक हम दुख सुख से बच नहीं सकते ।

जग का खेल है मन की लीला मन की समझ न आई ।
मन के विषय विकार में भूले मन ही भया दुखदाई ।।

मैं क्यों दुखी था ? अपने मन के विचार से । मन क्यों अशान्त होता है ? विषय विकार के कारण, मगर मेरी छोटी उमर की शादी न होती तो मैं शायद इतना न भटकता । विषय विकार केवल औरत के भोग का ही नाम नहीं है बल्कि संसार की आशाओं का भी विषय विकार है, हाय ! मैं यह बन जाऊँ, मैं वह बन जाऊँ, मेरे पास कार आ जाये, मेरी इज्जत मान हो जाये, इस प्रकार के बहुत से ख्यालात जो आदमी रखते हैं यह भी एक प्रकार का विषय है । जब तक मन का विषय आदमी को समझ नहीं आता, चाहे लाख कोई कोशिश करे, इस मन से छुटकारा नहीं मिल सकता । मैं नहीं समझ सका ! अपनी बाबत जानता हूँ और को क्या कहूं ! मुझको तो केवल तुम लोगों ने तार दिया, केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मुझे इस मन के रूप का पता लग गया, अब मैंने चाहे अपनी इच्छा से फँस जाऊँ ये और बात है । मगर मुझे पता लग गया । अब लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है, मैं तो होता नहीं । जो कुछ भी उनके अन्तर

होता है उनके अपने ही मन का खेल है। मैं तो नहीं जानता किसी के अन्तर इसी एक बात को परदे में रखकर, इन गुरुओं ने हम गृहस्थियों को, भोले भाले जीवों को, मूर्ख बना के लूटा है सच्ची बात बिलकुल नहीं बताई हमको ना ! और फिर सच्ची बात यह है, कि लोग सच्चाई को सुनने के लिये तैयार नहीं, दुनिया गुरुओं के पास जाती है। क्या कोई सतसंग के लिये जाती है ? कोई दुनिया के कामों के लिये जाता है, कोई पैसे के लिये जाता है, कोई लड़के के लिये जाता कोई सन्तान के लिये जाता है, कोई और दुखों का मारा जाता है. सच्चाई के लिये तो कोई नहीं जाता ! सच्चाई मिल नहीं सकती जब तक इन्सान अपने मन के रूप को नहीं समझता।

मुझ पर तो दया कर दी दाता दयाल ने, यह काम जब दिया था तो उन्होंने कहा था फकीर ! तुमको काम देता हूँ, तू न समझना, तू किसी का बेड़ा पार करेगा पर तुझको सच्चा सतगुरू सत्संगियों के रूप में मिलेगा, अब मिल गया। यह सन्त ताराचन्द बैठा हुआ है और भी बड़े बड़े महात्मा आते हैं जिन के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है। मैं तो जाता नहीं ! यह कहता है, मैंने इसके चने काटे, अब मैं तो था नहीं मुझको पता हीं नहीं ! यह वह राज (भेद) है जो आज दिन तक किसी महात्मा ने नहीं बताया। सबने हमको इशारे में कहा, सच्ची बात नहीं बताई और अन्धेरे में रखकर हमको लूट लिया, हमारी जायदादें ले गये, पैसे ले गये, धन ले गये, मान ले गये और दिया क्या हमको ? मन की कल्पना, हमको ज्ञान नहीं दिया, सच्ची बात नहीं बताई और अगर कोई बता भी जाय तो हम लोग सच्ची बात सुनने के लिये तैयार नही। दाता मुझे कहा करते थे—

फकीर ! गुरु तो मेरे पास, तेरे तन में, तेरे तन में, तेरे मन में तेरे स्वाँसों स्वाँस ! सन १९१६ से कहते चले गये मगर मेरी समझ में नहीं आता था, कि गुरु मेरे पास कैसे है क्योंकि मैं मन के विषय विकार में फंसा हुआ था।

मन से ऊँचे चढ़े जो प्रानी, बूझे सतगुरु ज्ञाना।
बूझ बूझ गुरु ज्ञान की महिमा सूझे पद निरबाना॥

जब तक कोई आदमी इस मन से ऊपर नहीं जाता, उसको सतगुरू की बात का कोई विश्वास नहीं आता। मन से ऊपर कौन जायगा ? मन से ऊपर वह जायगा, जिसको मन की कोई आस नहीं रहेगी। हम मन के अन्दर आस रखकर बातें करते रहते हैं। किसी आस को मन में रखकर विचार करते रहते हैं, पुत्र को याद करते हैं, स्त्री पती का और पति स्त्री का ध्यान करता है, जब तक यह हालत रहती है तब तक मन से ऊपर कोई जा नहीं सकता। मुझ पर तो दया कर दी केवल तुम लोगों ने। मैंने दाता से बड़ा प्रेम किया, उस प्रेम करने से क्या मैं मन से ऊपर चला गया ? नहीं। आरतियाँ करता था, छुट्टी ले लेता था तीन तीन महीने छुट्टी पर रहता, दाता के दरबार में चला जाता, आनन्द लेता था, मगर मन से पार नहीं जा सका, मन से पार तुम लोगों ने मुझे कराया है। जब से तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारी सहायता करता है, मैं नहीं होता ! मैं तुम्हें सच कहता हूं। आजकल के जितने पंथ हैं प्रायः सच्चाई को नहीं बताते हैं। सब अपने स्वार्थ के लिये गुरुवाई करते हैं, हमारे लिये नहीं करते। और इन का भी कोई कसूर नहीं ! हम लोग सच्चाई को सुनने के लिये तैयार नहीं। कोई तो इसलिये जाता है कि होशियारपुर में बड़ा भारी लंगर लगा हुआ है, लाखों आदमी जाते हैं, वह इसी बात में मस्त हैं।

शेरों के लैंड़े नहीं और सन्त न चलें जमात।

शेरों के झुंड नहीं होते, अकेले ही फिरते हैं। सन्त जमात लेकर नहीं फिरते, जिनके पीछे लाखों आदमी लगे रहते हैं यह सन्त नहीं, । यह अपने पिछले अच्छे करमों का फल भोगते हैं, यह बिलकुल साफ और सच्ची बात है। मैं इस प्रकार मन से ऊपर गया, मन से ऊपर जाने के बाद फिर मुझे बात समझ में आई :-

हद पर बैठ कहा सतगुरु ने चढ़ बेहद की घाटी।
चेला हद बेहद जब लाँघा उड़ी भरम की टाटी।

वह कहते हैं, गुरु हद में रह के बोलता है और चेले को बेहद और अनहद में ले जाता है। हद में रहके बोलने का क्या मतलब है ? यह तो उन को पता होगा जिन्होंने यह शब्द लिखे हैं। मुझे क्या पता मैं तो हद में रह के बोलने को यह समझता हूँ कि मैं बोल रहा हूं। अपने शरीर में रह के, मन में रह के ही आप के साथ बात कर रहा हूँ ना ! अगर मैं मन में न आऊँ, तो तुम्हारे साथ बोल नहीं सकता। तो गुरु जो है वह शरीर में रहता हुआ, मन के अन्तर रहता हुआ, चेले को बेहद अर्थात मन से परे ले जाता है। मैं मन से परे नहीं जा सकता था, यह जो गुरुवाई मुझको दी थी यह मन से परे जाने के लिये दी थी, समझ नहीं आती थी। मैं न गुरु हूं न महात्मा हूं यह आपको मैं सच्ची बात कहता हूं, हां, गुरू का काम कर जाता हूं गुरु नाम है ज्ञान का, समझ का और विवेक का। एक आदमी ने घरबार छोड़े, लड़के लड़कियां छोड़ दिये, चेले बनाये, घर का झंझट खतम हुआ। चेलों का झंझट पड़ गया, क्या फरक है ? दोनों ही संसारी ठहरे फिर उन दोनों में क्या अन्तर हुआ ? एक ने लड़कों की मुसीबतें सिर पर ली, और एक सतगुरु बन गया, चेले बना लिये, अब उनका झगड़ा ही खतम नहीं होता, क्या फरक है मुझे बताओ ! यह गुरु और चेले का दुनिया का एक व्यवहार है वरना जहाँ असलीयत है वहां न गुरु है न वहां चेला है—

हद पर बैठ कहा सतगुरु ने चढ़ बेहद की खाई।
चेला हद बेहद जब लांघा, उड़ी भरम की टाटी ॥

अज्ञानी जीव को गुरु हद में बैठकर बेहदी की तरफ ले जाता है। बेहदी है मन के परे। हद है तुम्हारा मन, तो जब तक तुम मन के रूप को नहीं समझोगे, तुम बेहदी में जा नहीं सकते चाहे जो मरजी कर लो, दो दो घंटे बेशक अभ्यास कर लो, पन्दरहा पन्दरहा हजार अपने चेले बना लो ! तुम्हारी असली जिन्दगी ने तुमको पार करना है।

अब भरम की टाटी कैसे उड़ी ? यह तो दाता को पता होगा कि उनकी भरम की टाटी कैसे उड़ी ? मेरी कैसी उड़ी ? जब से यह पता लग गया कि

मैं तुम्हारे अन्तर नहीं जाता, तो मेरे अन्तर में जितने ख्याल, जितने भाव, जितने विचार आते हैं मुझको विश्वास होना चाहिये कि वह असल में हैं नहीं मेरे अपने बनाये हुए हैं। जब मैं तुम्हारे अंतर जाता हूं, मैं तो होता नहीं। यह डाक्टर परसराम की औरत बैठी हुई है। मैं और परसराम बम्बई गये हुए थे, यह कहती है कि यह घर से स्टेशन के लिये चली, अन्धेरा था डर गई, कहती है बाबा ! तू आ गया, मैंने इसका हाथ पकड़ा, बातें करते करते स्टेशन पर आ गये, गाड़ी आ रही थी, बाबा ने कहा वह देख गाड़ी आ गई, मैं गाड़ी को देखने लगी, बाबा वहाँ था नहीं, इसने मुझ यह कहा। अब मैं अपनी आत्मा से पूछने का हक नहीं रखता कि क्या मैं उसे गाड़ी तक पहुंचाने के लिये गया था ? कभी नही। मुझे तो पता नहीं। यदि मैं लोगों को सच्ची बात नहीं बताता तो मैं दोषी हूँ। अगर मैं यह बात सच्ची आप लोगों को नहीं बताता और तुमको परदे में रखकर, तुमसे धन लेता हूं, मान लेता हूं तो क्या मैं दोषी नहीं हूं ? धोकेबाज नहीं हूँ ? जितने यह गुरू हैं जो सच्ची बात नहीं कहते, यह सब धोकेबाज हैं। बहुत निर्भय होके कहता हूं। जब मरते समय यह नहीं जाते किसी को लेने के लिये, फिर यह प्रोपेगन्डा करते हैं कि नाम ले जाओ, मरते समय सतगुरु तुमको ले जायेगा, क्या यह धोका नहीं देते ? मैं भी कहता हूं सतगुरु ले जायगा मगर वह सतगुरु फकीर या कोई और गुरु नहीं है जो तुमको ले जायगा। वह समझ या बुद्धी है जो तुम को सत्संग में दीगई है या सच्चा भेद बताया गया है अगर वह याद रहा तो अन्त समय में तुमको सतगुरु इस मन से निकालकर सतलोक ले जायेगा। यह नहीं कि फकीरचन्द ले जायगा या कोई और गुरू ले जायेगा, तुम सब भूल में हो। बाहर के गुरू ने तुमको जो समझाया हुआ है वह जो समझ तुम को मिलेगी, तुम्हारे दिमाग में आई हुई है, अन्त समय में अगर तुम्हारे करम अच्छे हैं, तुमको होश रही, तो वह समझ तुमको पार ले जायगी। हमको कहा तो गुरुओं ने सच्च है कि नाम ले जाओ, अन्त समय में सतगुरु तुम्हें ले जायगा, मगर लोगों ने यह समझा कि बाबा फकीर ले जायगा या कोई और गुरु ले जायगा। गरु और चले दोनों ही अन्धकार में रहे।

गुरु चेला व्यवहार जगत में झूठा बरत रहा
गुरु तो मान प्रतिष्ठा चाहे और चेला स्वार्थ संग बन्धा
कपटी गुरु और कपटी चेला दोनों छोड़ो पाप कटा ।

जो गुरू जीवों को परदे में रखता है और साफ साफ बात नहीं बताता अपने झूझे मान के लिये, इज्जत के लिये, काम करता है वह गुरु नहीं है। इसमें गुरुओं का कसूर नहीं गिनता. मैं कितनी साफ और सच्ची बात कहता हूं फिर भी तुम लोगों की समझ में नहीं आती । तो गुरू हद में बैठकर अपने बचनों द्वारा बोलते हुए जीवों को बेहदी में ले जाता है ।

हद में दुख बेहद में सुख है, अनहद पद निरवाना ।
हद बेहद अनहद जब लांघे, मिटे आना जाना ॥

हद में दुख है, जब तक तुम मन में हो दुख सुख भोगोगे । मन से ऊपर चले जाओगे वहां सुख है और अगर फिर सुरत को शब्द में ले जाओगे, आना जाना खतम होगया न पैदा होंगे न मरेंगे ।

आज कल तो रास्ता बिलकुल आसान कर दिया है, अब समय में फिल्म चलती हैं । डाक्टरों ने सिद्ध किया है कि मरने वालों को एक बड़े Sencetive Scale पर रख दिया जो तुम को सब कुछ बता दे । जिस समय उसकी रूह निकल गई, किसी के शरीर समय का भार पंदरा ग्राम घटा, कोई पचीस तो कोई बीस ग्राम घटा और जो चीज अन्दर से निकली, उसको सेकरीन पर खास मसाला लगा कर निकलते देखा गया । अब जो चीज भारी है उसको जमीन अपनी तरफ खीचेगी । तुम ने लाख अभ्यास किये हुए हैं, लाख भक्ती की हुई है अगर तुम्हारा मोह किसी भी स्थूल चीज के साथ है तो जब तुम्हारा सूक्ष्म शरीर अन्दर से निकलेगा, वह भारी होगा तुमने कितनी भी नेकी की हुई है जो कुछ भी किया हुआ है जमीन की आकर्षक क्षक्ति तुम को ऊपर नहीं जाने देगी, चाहे तुमने लाख गुरु बन के तुम को उपदेश किया हुआ है, उपदेश देना एक ओर चीज है और खुद अमल करना एक और चीज है उपदेश तो हर आदमी कर सकता है ।

अन्त समय में स्थूल चीज का ध्यान तुम्हारे अन्दर आना, तुम्हारे सूक्ष्म शरीर को भारी करेगा, जब सूक्ष्म शरीर भारा है वह आवागमन से निकल नहीं सकता '

यही बात बाबा सावनसिंह जी महाराज कहते गये हैं, मैंने इसको स्पष्ट करके बता दिया उन्होंने इशारे से कहां। वह कहा करते थे कि जिनको हरिद्वार से प्रेम है वह हरिद्वार की मछलियां बनेंगे, मैं पूछता हूँ, जिनको व्यास के साथ प्रेम है क्या वह व्यास की मछलियाँ नहीं बनेंगे ? या जिनको होश्यारपुर से प्रेम है, मर कर क्या वह होश्यारपुर में पैदा न होंगे या जिनको उस कृष्ण से प्यार है जो गोकुल में पैदा हुए थे, तो क्या वह गोकुल में न पैदा होंगे ?। बाबा सावनसिंह जी ने तुमको झूट नहीं कहा। तुम अगर लड़के लड़कियों को प्राद करते मरोगे तो उनही के घर पैदा होगे और किसी के कुछ बनोगे, किसी के कुछ होगे। यह एक Law है, कानून है, हमारे शास्त्रों का सिद्धान्त भी यही है। अन्त समय में मालिक मुझे शक्ति दें कि मैं शरीर से बाहर निकल कर बता सकूं कि मेरे साथ क्या बीती। तब तो सत्संग पूरा नहीं तो सारा अधूरा, लेकिन हम थियूरियाँ Theories ही बताते हैं न, पर बिश्वास तो नहीं।

हद में दुख बेहद में सुख है अनहद में पद निरवाना।
हद बेहद अनहद जब लांघे, मिटे आना जाना ॥

हद में दुख है, बेहदि में सुख है, अनहद में क्या है ? निरवान है, मगर अनहद से परे जाने पर तुम्हारा आना जाना मिटना है। मन के अन्दर रहते हुए, जब तक तुम मन के ख्यालात को महसूस करते हो तो आपको दुख और सुख दोनों ही आयेंगे, जब मन के रूप को तुम समझ गये, इसमें न फँसे ऊपर चले गये तो तुमको सुख है। जब मन के रूप को समझ गये, तो फिर मन दुख का कारण नहीं बनेगा। यदि शब्द में चले गये तो तुमको निरबान मिलेगा। निरवान किसे कहते हैं ? पता नहीं सन्तों का निरवान क्या है मैं जो निरवान समझता हूं वह बताता हूँ। निरवान संस्कृत शब्द है, फूँक मार

के उड़ा देना, जो आदमी शब्द को सुनता है उसके अपने अन्दर जितने विचार व ख्यालात होते हैं। सब के सब उड़ जाते है। तो मन के अन्दर ख्यालात का न रहना ही निरवान है। जो अनहद से परे चला जाता है वह अपनी हस्ती मिटा जाता है। अनहद को सुनती है सुरत, जब सुरत, ही नहीं रहेगी तो अनहद किस को आयगा? उसकी हस्ती अपनी जात में मिल गई। काम खतम होगया न वह पहले फकीरचन्द था न फिर वह फकीरचन्द रहेगा मगर यह चौथी मंजिल है और आखिरी मंजिल है मैं इसमें रहने की कोशिश करता हूँ मगर रहा नहीं जाता, मैं यह कहा करता हूं कि आप लोगों की दया से मुझे पता लग गया कि यह मन है। मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, तो मैं मन को छोड़ जाता हूँ आगे है प्रकाश और शब्द। अब कोशिश यह करता रहता हूँ कि उस चीज को देखूँ, उसको जानूँ, वहाँ जाऊ जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। तुम अपने अन्तर प्रकाश को देखते हो, देखने वाला और है और प्रकाश और है। तुम शब्द को सुनते हो, सुनने वाला और है और शब्द और है, तो जब वहाँ जाओगे अनहद छूट जायगा। मुझ से नहीं छूटा, कभी दो महीने तीन महीने के बाद समाधि लगती है तो कभी जाता हूं वहां, अनहद को छोड़ता हूं वरना अनहद अभी तक मुझसे छूटा नहीं,, शायद उमर भर न छूटे यह मुझे पता नही, मेरे हाथ में कुछ नहीं है। यह किसी और ताकत के हाथ में है—

गुरु की दया साधु की संगत, उत्तम गति मति पावे।
राधास्वमी चरन शरन बलिहारी, भरम भौ जान न आवे॥

गुरु की दया यह होगीं, गुरु से प्रेम किया, गुरु ने काल दे दिया। गुरु-वाई उनको मिलती हे जो अधूरे होते हैं। जो पूरा होगया वह गुरुवाई नहीं करेगा, वह तो गुरुवाई को दुख समझता है। गुरु लोग जिनको काम देते हैं उनमें कमी होती है क्योंकि उन्होंने प्रेम किया हुआ होता है। पिछले समय में इस तरह साफ ब्यानी का दस्तूर नहीं था जिस तरह मैं करता हूँ हम

केवल इशारा करते थे जो समझ गया, समझ गया जो न समझा ना समझा, जिसको समझा दिया उसको कह दिया—

धर्मदास तोहि लाख दुहाई।
सार भेद बाहर नहिं जाई॥

मैंने उस परदे को हटा दिया, क्यों हटाया, यह पता नहीं, मेरे करम। दाता ने कहा था, चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना, पता नहीं मैंने ठीक किया या गलत किया, यह मुझे पता नहीं। मैंने जो कुछ समझा अपने करम भोग बस कह चला। तो गुरु की संगत से क्या हुआ? गुरु के दरबार में गये, गुरु ने तजुर्बा कराने के लिये आप लोगों की संगत मुझको दी।

ताराचन्द! तुमको अपना जन्म बनाना चाहिये, बुरा मान या अच्छा मान, यह इज्जत या मान गुरुवाई धन या दौलत यह पिछले जन्मों के करमों के कारण से मिलते हैं। पिछले करम तू ने अच्छे किये हुए हैं, इसलिये तुमको मान मिला! तेरा मान है, तेरा नाम है, तेरा सब कुछ है, यह तुम्हारे पिछले करम हैं। मुझे जो कुछ मिल रहा है वह मेरे पिछले करमों का फल हैं, इस जन्म के करमों का फल नहीं है, मैं अपनी कमजोरियों को जानता हूँ।

गुरु की दया साधु की संगत, उत्तम गति मति पावे।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी भरम भव जा न आवे॥

गुरु की दया होगई, तुम साधु थे, साधु वह है जो मन के तबके में है। जिसके अन्दर रूप प्रकट होता है, बातें करता है, कोई बात समझ आगई, कह दिया, पूरी हो जाती है, ऐसे आदमी को साधु कहते हैं। आप लोगों की संगत व अनुभव से मुझे समझ मिल गई कि रूप जो प्रकट होते। यह सब उनके अपने मन का खेल है, मगर यह तालीम क्या आप लोगों के लिये है? यह आप लोगों के लिये नहीं है। यह तो खास खास आदमियों के लिये है। आप लोगों को इस तालीम की क्या जरूरत है। आप लोग तो

दुनिया के दुखों से बचना नहीं चाहते। आप तो दुनियाँ में सुख चाहते हो, आगे चाहे किसी नरक में ही जाओ तुम्हें इस बात की कोई परवा नहीं, इस वास्ते यह सन्तों का मार्ग आम दुनियाँ के लिये नहीं है बिलकुल नहीं, इस वास्ते मैं किसी को नाम नहीं देता। आम दुनियादारों के लिये है शिव-संकल्प अस्तु। अच्छा ख्याल रखो, अपनी ड्यूटी को पूरा करो परोपकार करो, माता पिता की सेवा करो, दुखियों की सहायता करो, किसी के साथ चार सौ बीस, हेरा फेरी, धोका फरेब मत करो आम दुनियादारों के लिये यह तालीम है।

सन्तों की तालीम उनके लिये है जिनको यह विश्वास होगया है कि यह दुनिया दुख की खान है। सन्तों ने यह नतीजा इनके लिये निकाला है जो लोग हमेशा के लिये दुनिया से बचना चाहते हैं। लोगों ने जब यह देखा कि कांग्रेस बहुत तंग कर रही है तो लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि कांग्रेस को छोड़ दो। तो ऐसे ही सन्त लोग जब देखते हैं कि दुनियां में दुख हीं दुख है और सुख नहीं है, तो उन्होंने यह नतीजा निकाला कि हम मरने के बाद इस दुनियाँ में नहीं आवेंगे। आयेंगे या नहीं आयेंगे, इसका सबूत मेरे पास कोई नहीं।

मैं ने अगर यह Beman temple बनाया तो अपनी जात के लिये नहीं बनाया बल्कि मुझे दुख आता है कि हम गृहस्थियों को अन्धेरे में रख कर बुरी तरह लूटा जारहा हैं। सचाई नहीं बताई जाती, क्योंकि मेरे जिम्मे निबल, अबल अज्ञानी जीवो की सहायता करना है, इसलिये यह काम करता हूं। ताराचन्द सचाई के साथ गुरुवाई किये जा, यह पिछला तेरा कर्म है तुझे यश मिलना है सो मिल रहा हैं। अपनी नीयत को साफ रख। चार पैसे कोई तेरे आश्रम को दे जाय तो भला, न दे जाय तो भला, तेरी तो अपनी जमीन है, तुझे तो भगवान ने शेर बनाया है, किसी की परवाह न किया कर सच्ची बात कहा कर, कोई तेरे पास आवे या न आवे जिन्होंने तरना है, उन्होंने तरना है, ! जिन्होंने नहीं तरना, उन्होंने नहीं तरना।

———

नाम दान

लेखक—दुर्गादास चमन शिष्य परमपुरुष श्री फकीरचन्द जी महाराज
मानवता मन्दिर, होशियारपुर

कर्म का बन्धन सबके साथ जुड़ा रहता है। यह संसार बंधन की दृष्टि से ही संसार है। इस दृष्टि को तनिक सा ऊँचा कर लो तो यहां पर कुछ भी नहीं। सब जगह एक खेल ही दृष्टि में आएगा। किसी को कोई भी बात समझाने के लिए शब्दों का प्रयोग किया जाता है। शब्दों का अर्थ भी अपनी अपनी मानसिक वृत्ति के अनुकूल ही होता है जैसे एक शब्द है रोना! इकट्ठे रूप में इसका अर्थ रोने से अर्थात अश्रुपात से है। यदि इसे यूँ कहें कि रोना तो उसका उल्टा अर्थ हो जाता है। अर्थात मत रो। आज सारा संसार इसी एक-उलझन का शिकार हो रहा है। अध्यात्मवाद में भी अर्थों के बखेड़े में पड़कर बड़े-बड़े ग्रन्थ अपनी अपनी समझ के अनुकूल बनाए जा रहे हैं। वास्तव में अध्यात्मवाद है क्या मन की वृत्तियों पर कन्ट्रोल करना और मन से ऊपर रहना। सब अभ्यास जैसे नवधा भक्ति, राजयोग, हठयोग नादयोग, सुरत शब्द योग आदि इसी एक लक्ष्य को सिद्ध करने के लिए हैं। प्रत्येक मत के आचार्यों ने इसी लक्ष्य को सामने रखकर साधन किए। जहां जहां तक रसाई की वहाँ तक का भेद देकर पंथ स्थापित किए।

सच पूछो तो हम गृहस्थी इन पंथों में आकर फँस गए और मानसिक आनन्द तक ही सीमित रहे। यह सब आनन्द मन के स्थूल, सूक्ष्म कारण और महाकारण तक ही हैं। मुक्ति मन से ऊपर है। आज का मानव सच पूछो तो इन्हीं पन्थों के चक्कर में भटक रहा है। कई स्थानों पर पंथाई आपस की ईर्ष्या, द्वेष की ज्वाला में बह रहे हैं।

भाइयो सच्ची वस्तु तो मन से ऊपर है फिर इन पंथों में भटकने से क्या लाभ। मनुष्य बनो आपस में प्रेम करना सीखो। निर्धन की सहायता करो इससे मन पवित्र होगा और अच्छी या बुरी वस्तु समझने की योग्यता प्राप्त

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

होगी। यदि कोई नामधारी ईर्ष्या, द्वेष की ज्वाला का शिकार है तो वह आम मनुष्य से भी रह चुका हैं। रहा अध्यात्मवाद, वह प्रत्येक मनुष्य के अन्दर है हाँ कुछ दिन ऐसे परम पुरुष का सत्संग जरूरी है जो मन से ऊपर रहता हो या रहने का अभ्यास कर रहा हो। वह प्रत्येक मानव की प्रकृति जान सकता है और उसके अनुसार उसको दीन वह दुनिया की शिक्षा दे सकता है। यह कठिन नहीं हाँ जिज्ञासू में निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है।

१. मुक्ति के लिए हार्दिक इच्छा २. संसार से वैराग ३. परमपुरुष की खोज वह मिल जाने पर विश्वास ४. सतगुरू स्वरूप के कहने पर विश्वास। ५. मानव धर्म का पालन।

यह पांच वस्तुएँ जिस जिज्ञासू में हैं उसे अधिक किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं। बाकी रही बात साधन और अभ्यास की। संसार का प्रत्येक मनुष्य एक जैसा अभ्यास नहीं कर सकता। आजकल सुरत शब्द योग की भरमार है। कई मनुष्यों को तीस चालीस चालीस वर्ष नाम प्राप्त किए हो गए किन्तु जीवन में कोई भी परिवर्तन नहीं आया अतः मुक्ति सच पूछो तो सबके भाग्य की वस्तु नहीं। नानक साहिब लिखते हैं—

नानक कोटिन में कोई जो यह नामत पार।

अतः इस ओर सच्चे जिज्ञासू बनकर झुकना चाहिए और अपना तन, मन धन मालिक के अर्पण करते हुए अपना फर्ज निभाते हुए परमपुरुष के संकेत पर अभ्यास करना चाहिए।

दास को ऐसे एक दो व्यक्ति मिल चुके हैं जो कि अन्तर में कोई साधन अभ्यास नहीं कर रहे किन्तु संसार की ओर से पूर्णतया विरक्त होकर अपना कार्य कुशल रूप से कर रहे हैं और हर प्रकार से प्रसन्न हैं। छानवीन करने पर सब तरह से जब उन्हें देखा गया तो प्रतीत हुआ कि वह सहजावस्था की ओर बढ़ रहे हैं। अन्तर का प्रकाश देखना अन्तर के सूक्ष्म, कारण और महाकारण आदि का आनन्द लेना है और उन स्थानों की योग्यताओं अर्थात सिद्धि शक्तियों को प्राप्त करना है। इन सब बातों का पता केवल पूर्ण भेदी गुरु ही दे सकता है। इसलिये गुरु की महानता है जिस प्रकार पुराने समय

में योगी लोग नीचे के छः चक्करों पर अभ्यास करते थे और वर्तमान समय में संतों ने मनुष्य को निर्बल समझते हुए वह अभ्यास छुड़ा कर ऊपर के छः स्थानों का अभ्यास शुरू किया है। इसी प्रकार परमदयाल पण्डित फकीर-चन्द मानवता मन्दिर होश्यारपुरजी के कहने के अनुसार स्पष्ट रूप से यह ज्ञान होरहा है कि आगे ये ऊपर के छः चक्कर भी मानव नहीं कर पाएगा और नामदान (समझ) इससे ऊपर का दिया जाया करेगा क्योंकि इस बुद्धि-युग में बुद्धि तीव्रता से आगे जारही है अतः मुक्ति के जिज्ञासुओं को सदैव सच्चे गुरु की खोज करके परम गुरु से जुड़े रहना चाहिए।

सत्संग

हुजूर परमसन्त परम दयाल पं० फकीरचन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर २४-१-७८

पद कमल में सिर झुके नित, दोनों कर को जोड़ कर
आपही को हो रहूं, मन मोड़ तोड़ मरोड़ कर ॥
कठिन माया जाल है, और कठिन काल कराल है।
कठिन जग जंजाल है, दुख पाया नाता जोड़ कर ॥
शान्ति जाती रही और, भ्रान्ती चित में वसी।
आप पर दृष्टि गई, आया शरण सब छोड़कर ॥
दया कीजे मेहरि कीजे, लीजे चरनों में लगा।
आपका मैं हो रहूं, भरमों का मटका फोड़कर ॥
राधास्वामी दीन हित, भवनिध से बेड़ा पार कर।
यह है मेरी वेदना, संसार से मुख मोड़ कर ॥

जज्ज साहिब आप आये ! जिस दुनिया में हम रहते हैं मेरा अनुभव है कि यहाँ सुख और शान्ति नहीं है। नारायणदास की पत्नी आती है वह

शिकायत करती है कि मैं बेचैन रहती हूं। हरेक आदमी अपनी दशा आप देखे। कोई बचने का रास्ता है? क्या हम इस दुनियां में किसी तरीके से बच सकते हैं?

जब तक किसी की सुरत शरीर में है और मन में है कोई नहीं बच सकता—जब तक कोई शरीर में है उसकी सुरत शारीरिक अवस्था और मन की अवस्था को महसूस करती है उसको शान्ति नहीं। कोई भी हो।

पद कमल में सिर झुके नित, दोनों कर को जोड़ कर।
आप ही का हो रहूँ, मन मोड़ तोड़ मरोड़ कर॥

गुरु के चरण यह नहीं जी मेरे हैं, यहां दुनिया भूली हुई है, जिस महापुरुष ने राधास्वामी मत चलाया उसने साफ लिखा है सत्गुरु कौन है? सत्गुरु शब्दस्वरुपी राधास्वामी दयाल उनके चरण प्रकाश—हमारे यहां हिन्दुओं में प्रकाश अथवा सावित्री का साधन है तो जब तक कोई आदमी अपने आपको अपने आपको अपने अन्तर में उस प्रकाश जिसको ब्रह्म भी कह देते है उसमें नहीं जाता तब तक शान्ति नहीं है :

ब्रह्म कई प्रकार के हैं, सबल ब्रह्म, शुद्ध ब्रह्म, पार ब्रह्म और शब्द ब्रह्म सबल ब्रह्म वह एनर्जी है जो हमारे शरीर में गती लाती है ब शुद्ध ब्रह्म वह शक्ति है जो हमारे मन में रहती है—पार ब्रह्म वह है जो हमारी आत्मा में रहता है, शब्द ब्रह्म वह है जो हमारी सुरत में रहता है—सनातन धर्म और राधास्वामी मत की शिक्षा में कोई अन्तर नहीं।

पद कमल में सिर झुके नित, दोनों कर को जोड़ कर।

इस दुनिया में कोई सुखी नहीं रह सकता। हम अपने-अपने कर्मों के अनुसार कोई बाप बनता है, कोई बेटी बनती है, कोई औरत, कोई चाचा या ताया बनता है। यह सब लेने देने के सम्बन्ध हैं और कुछ नहीं। जितना जिसका लेना देना है उतना ले दे कर अलग हो जाता है, यह बिल्कुल सच्ची बात है।

मैं नहीं जानता कि शास्त्रों में क्या लिखा हुआ है। मेरे साथ जो बीती वह बताता हूं। मेरी एक लड़की थी जिसका नाम प्रेम प्यारी था। मैंने

उसकी शादी केवल डेढ़ हजार रुपये में करदी। चलने लगी तो मेरी औरत बहुत नाराज हो रही थी कि तुमने इसको कुछ दिया नहीं। मैंने कहा सात सौ रुपया मैंने इसका पिछले जन्म का कर्जा और देना है। अब दे दो तो हमारा लेने देने का सम्बन्ध टूट जायगा। मैंने लड़की को कहा प्रेम प्यारी ! जब तू अपना मकान बनवायेगी, मैं यदि जीवित रहा तो सात सौ रुपया तुमको दे दूँगा या पुरुषोत्तमदास को बोलूँगा या तुम्हारा भाई तुमको दे देगा। बात आई चली गई। वह चार साल के बाद बीमार हुई। मेरी पत्नी मजबूर करती थी ! छः महीने सौ-सौ रुपया भेजता रहा, सातवे महीने पुरुषोत्तमदास को मैंने लिखा सौ रुपये मेरे दामाद को कोटा नामक शहर में भेज दो। मैंने अपनी स्त्री को कह दिया कि लड़की अब मर जायेगी, वह कोटे गई और देखा कि लड़की मर गई। हम एक दूसरे के ऋणी हैं। मैं जो कुछ कह रहा हूँ यह अनुभव की बातें कह रहा हूं।

मेरा लड़का शाह पदम जंग पैदा हुआ मैं ने कहा मैंने इसको देना है लेना नहीं। आज तक मैंने उसकी कमाई नहीं खाई और न ही कोई कपड़ा पहना है दो सौ रुपया भेजता है तो उसकी वहिन है वहाँ खर्च हो जाते हैं। तो यह लेना देना है। किसी का लेना है किसी का देना है जो गृहस्थी लोग सत्संग में आते हैं ऐसा समझ लें यदि मुसीबतें आती हैं तो वे परवाह रहना चाहिये, यह सब लेना देना है। तो फिर कहाँ जायें ? किस पद कमल में जायें ? प्रकाशरूपी पद कमल जो पारब्रह्म है उसके अन्दर जायें। तो हैं गुरू के सच्चे चरण। बाहर के गुरू का यह कर्तव्य है कि वह जीव को असली और सच्चे गुरु के चरनों का पता दें। यह उसका उपकार है।

मगर सारे आदमी तों अपने अन्तर प्रकाश पैदा नहीं कर सकते ! इन प्रकाश रूपी गुरु के चरणों को प्रकट करना कोई आसान काम नहीं है। पहली बात तो यह है कि जिनको दुनियां की इच्छायें हैं वह नहीं जा सकते। तो केवल वह जा सकता है जिसको इसका अनुभव होगया है कि इस दुनियां में सुख नहीं और कोई किसी का नहीं है। फिर वह मोह को छोंड़ देता है।

मां बाप, बहिन, भाई ये सब सम्बन्ध हैं। कोई माँ बनती है कोई बप बनता है। इन्सान इसमें फँसा हुआ चक्कर खाता रहता है।

आपही का हो रहूं, मन मोड़ तोड़ मरोड़ कर।

मैं दुनियाँ को फकी बन्द के पीछे लगाना नहीं चाहता, मैं इसको पाप समझता हूं।। सच्ची बात यह है।

घर में घर दिखलायदे, वह सतगुरु पुरुष सुजान।

बाहर के गुरु की संगत की इस वास्ते जरूरत पड़ती है कि उसकी संगत से उसकी रेडियेशन से यदि वह गुरु स्वयं बन्धन में नहीं है, तो जीव को सहारा मिलता है। गुरु तो सारे बन जाते हैं। आप विद्वान हैं, पढ़े लिखे हैं, आप भाषण दे सकते हैं दुनियां पर प्रभाव डाल सकते हैं और चकित कर सकते हैं मगर आया आपका मन वश में है कि नहीं, यह देखने की बात है। मन तब काबू में आएगा जब आप अपने अन्दर में प्रकाश का साधन करोगे यहां गायत्री मन्त्र है।

ओउम् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्,
भर्गो देवस्य धीमहि, धीयो योनः प्रचोदयात।

बात एक ही है जो गायत्री मन्त्र सिद्ध करता है वही सन्त मत में है। तरौड़ मरोड़ का क्या अर्थ है ? दुनियां के विचारों को छोड़ना। आप गृहस्थी लोग तो इस योग्य नहीं है। आपके लिये यह नाम नहीं है, जब तक स्त्री आदि के साथ लगाव है, तुम उनको अपना समझते हो, भाई को अपना समझते हो, औरत को अपना समझते हो, बच्चों को अपना समझते हो वह जब तक तुम्हारा लगाव है तुमको सुख नहीं मिल सकता, लाख तुम संयासी बन जाओ या त्यागी बन जाओ, जो मरजी करलो। वैराग्य का उदय होना अनिवार्य है। वैराग्य भी कारण नहीं होना चाहिये, अकारण वैराग्य होना चाहिये, लड़का मर गया या स्त्री कृतघ्न हो गई और आदमी वैरागी हो जाता है, जिस प्रकार भर्तृहरि हुआ है। स्त्री कृतघ्न निकली, उसको वैराग्य होगया। अकारण वैराग्य नहीं था, कारण

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

बैराग्य था। अकारण वैराग्य सदा सत्संग द्वारा मिलता है, सत्संग में सच्ची समझ मिलती है कि दुनियां कैसे बनती है, क्या नहीं है ? यह है एक दूसरे का लेना देना। तोड़ मरोड़ के अर्थ ये हैं कि हर बात को समझ करके दुनियां के रूप को समझो कि दुनियां ऐसी ही है। जिस प्रकार एक घर में एक पागल आदमी होता है। सब को पता होता है कि यह पागल है तो वह जो कुछ भी कहता है कोई बुरा नहीं मानता। मेरी बड़ी लड़की है अर्ध उन्मत्त है, कुछ न कुछ कह देती है, मुझे कभी क्रोध नहीं आया आप समझ रहे हो ! मेरी पत्नी पिछली आयु में बीमार होगई, बीमारी की दशा में वह ऊट पटांग बोल देती थी। जो कुछ उसके मुँह में आया कह दिया। मुझे क्रोध नहीं आता था। क्योंकि मैं जानता था कि इसका दोष नहीं है। बीमारी की वजह से है। यह है तोड़ मरोड़ का अर्थ।

तो जज्ज साहब आप आये हैं, अपने अन्दर प्रकाश का साधन किया करो। कोई बाप, कोई स्त्री, कोई बच्चा कोई किसी का नहीं है। यह तो हमारा संसार का व्यवहार है। अपनी ड्यूटी समझ कर उनकी जो सेवा करना चाहते हो करो, अगर परमार्थ चाहते ही तो अनासक्त बनो। यह मेरा गुरु है इनकी सेवा करनी है। यह मेरे माँ बाप हैं, ये मेरे बच्चे हैं, इनको है, अगर इस प्रकार की चिन्ता है तो परमार्थ को प्राप्त नहीं कर सकते, पड़ना होगा पढ़ जायेंगे जितनी हो सकती है उतनी अपनी ड्यूटी पूरी करो। उसमें फँसो नहीं, मैं ने तो यह समझा हैं भाई ! सच्ची बात आपको कहता हूं।

तुम देखो ! मेरा लड़का है। सब लड़कों के लिए कोशिश करते हैं। मैं ने जब से वह नौवीं कक्षा में आया उससे पूछा तक नहीं कि तू क्या करता है ? पढ़ता है या नहीं पढ़ता ? केवल दो तीन बार उनको मैंने कहा बच्चा ! पढ़ता है कि नहीं ? उसने कहा पिताजी ! यह पढ़ना तो भाव पर आधारित है। आप पढ़ाई के विषय में मुझसे न पूछें। लोग इतनी कोशिश करते हैं अनेक आदमियों से मिलना पड़ता है। मैंने कोई कोशिश नहीं की, उसने

आप ही मेटर्लाज ले ली । उसने बनना था, उसने अपने आप ही प्रार्थना पत्र दे दिया, और सफल होगया । मुझे उसने आगे के लिए कहा, मैंने कहा मेरे पास तो रुपया नहीं है, दस हजार हैं पांच हजार तेरे वास्ते है और पाँच हजार तेरी बहिन की शादी के लिए हैं । लड़के ने मेरे भाई से सहायता प्राप्त की और पढ़ गया । बख्तावरसिंह ! चिन्ता नहीं करनी चाहिये ।

लिखा ललाट टारे नहीं टारा,
भावीं को, को मेटन हारा ।

केवल अपनी ड्यूटीं पूरी करो शेष जो कुछ होना है वह तो होकर रहना है । ना तुम बदल सकते हो, ना मैं बदल सकता हूँ और ना कोई खुदा बदल सकता है । जो जो कर्म किये हैं वह भोगने पड़ते हैं । यह आपके लिये ही सत्संग है ! तुम माँ की सेवा करना चाहते हो, तो सेवा नहीं लेना चाहती फिर तुमको चिन्ता करने की क्या जरूरत है । तुम मेरी बात को समझते हो या नहीं ? घरों के बहुत झगड़े होते हैं, मैंने एक दिन इससे पूछा कि तुम प्रेम के पास क्यों नहीं जातीं ? तू बुढ़ापे में लड़के के पास चण्डीगढ़ चली जा । कहने लगी पुत्र तो पुत्र ही होते हैं परन्तु बहुऐं नहीं सभालती । क्षमा करना मेरी बात को । इस दुनियां में कोई भी सुखी नहीं है । सच्ची बात पूछो तो दुनियां के साथ रह कर निर्वाह करना एक बहादुर आदमी का काम है । मास्टर मोहनलालजी घर का वातावरण ठीक ना ही तो वहाँ इन्सान शान्त रह कर अपनी जिन्दगी व्यतीत करे मैं उसको बहादुर समझता हूँ । स्वामीजी मुसीबत पड़ने पर स्त्री को छोड़ कर घर से बाहर भाग कर जंगल में चले गये और संन्यासी हो गये तो तुमने बहादुरी तो नहीं की । Don feelt anywordsयदि आप घर छोड़ कर सन्यासी होगए, बड़े अमीर थे, प्रोफेसर थे तो आपने कोई बहादुरी न की । बिलकुल सच्ची बात है । बहादुर वह है जो घर में रहता हुआ सब मुसीबतों को सहता हुआ अपने रूप को देखता हुआ किसी बन्धन में न आये ।

मेरी पत्नी मुझे बहुत कुछ कह देती थी और जब उसको होश आजाती तो कहती आपको क्रोध नहीं आता ? मैं कहा करता था कि तुम्हारी बात का क्रोध नहीं आता । कभी-कभी वह कहा करती थी कि जब कमाते थे तो गुरू का घर भरा या भाई को पढ़ाया या भाई के बच्चों को पढ़ाया अब पिछली आयु आगई है सत्सगियों के घरों से पैसा मांगा करो । वह ऐसा कहा करती थी । मैं गरीब था मगर मुझे कभी क्रोध न आया, वह कहती तुम्हें क्रोध क्यों नहीं आता ? मैं कहा करता था कि दाता दयालजी ने तुम्हारी बाबत मुझे यह कहा था कि तू उनकी लड़की है । देखिये गुरु क्या करता है ? उन्होंने मेरा घर का वातावरण कैसे ठीक किया । तो यह है संसार । इससे अगर कोई बचाव की सूरत है तो वह यह हैं जो मैंने ऊपर बताई है ।

मेरे पास सब अशान्त आदमी आते हैं । यह संन्यासी हुए हैं मैं इनको संन्यासी नहीं समझता । यह अशान्त होकर के या भयभीत होकर भाग कर संन्यासी बने बुरा न मानना ! असली संन्यास दिल का होता है, औरतें बच्चे और दौलत कुछ नहीं कहती । मन को समझा नहीं, क्योंकि मन कमजोर होता है-कष्टों का सामना नहीं कर सकता इस वास्ते भागता है मेरी बात जो मैं कहता हूं अनुभव की कहता हूं, आप समझते हो मेरी बात को स्वामीजी ! राजा जनक बन कर रहो संन्यास तो जरूरी है यह मन से होना चाहिये । एक आदमी के पास घूस खाने के सारे साधन हैं अगर वह घूस नहीं खाता तो उसकी बहादुरी है । एक आदमी के स्त्री साथ रहती है दो चार बच्चे पैदा करने के बाद अपने आप पर काबू पा सकता है तो वह बहादुर है । तो जिसकी स्त्री मर गई वह कहे कि मैं बड़ा नेक हूं तो उसकी बहादुरी किस बात की है ? बात मैं सच्ची कहता हूँ बहादुरी तो उसकी है कि स्त्री भी साथ रहे फिर भी अपने आप को काबू में रखे, ।

कठिन माया जाल है, और कठिन काल कराल है ।
कठिन जग जंजाल है, दुख पाया नाता जोड़कर ।

माया क्या है ? माया का जाल क्या है ? माके अर्थ मापना या के अर्थ यन्त्र । जिस यन्त्र से कोई वस्तु मापी जाती है वह माया है और

वह हमारी बुद्धि है। हम को जितने दुःख सुख होते हैं अपनी बुद्धि से ही होते हैं। हम कहते हैं कि किसी ने कुछ कह दिया और उस पर क्रोध आया। मैं कहा करता हूं मेरा सतसंगी वह है यदि कोई मुझे गाली निकाले और कुछ बुरा भला कहे तो उसको क्रोध न आये तब वह मेरा शिष्य है अन्यथा नहीं। यदि मुझे कोई कुछ कहे या गाली निकाले तो मुझे क्या, मेरा क्या जाता है।

शान्ति जाती रही और भ्रान्ति चित में बनी।

जब इस बुद्धि के चक्कर में आदमी आ जाता है तो आदमी अशान्त हो जाता है। फिर ढूढ़ता है मैं कहां जाऊँ! अशान्ति क्या है? क्योंकि उसने अपना और संसार का रूप नहीं जाना। वह मन के चक्कर में है बाहर नहीं निकला। यदि मैं तुम लोगों से प्यार करूँ अपना समझूँ तो मैं मन के चक्कर में हूं यदि मैं मां को अपना समझता हूँ किसी के साथ बंधा हुआ हूं तो मैं भी माया के जाल से न निकला। स्त्री को अपना समझता हूं, बेटे को अपना समझता हूं तो वह जब बीमार हो जायेंगे या मर जायेंगे या मेरे सामने हो जायेंगे। तो मुझे दुख होगा क्योंकि मैंने दिमाग में यह न समझ आ जाये, यदि न आवे तो न सही, बुद्धि ही ने माना हुआ है कि मेरा लड़का है। लड़का नालायक हो गया या मर गया तो मुझे दुख हुआ। तो अपना लगाव दुनिया से रखना ही माया का जाल है और जब यह संसार की आशा पूरी नहीं होती तो हम अशान्त हो जाते हैं। इसका उपाय गुरु, सतगुरु, सत्संग और साधन है। यदि मेरे सत्संग में आने वालों को शान्ति प्राप्त नहीं होती तो यह मुझमें कमी है शर्त यह है कि वो शान्ति के लिये आया है। यह जज साहिब इसी लिये आये हैं, कहते हैं कि मैं अशान्त था छुट्टी माँगी, दी नहीं। मैंने कहा मैं न्याय नहीं कर सकता क्योंकि मेरा Balance of mind ठीक नहीं। तब एक दिन की छुट्टी ली। और यहाँ आ गये। क्यों आई यह अशान्ति? घर के झगड़े। इस वास्ते यह सारा सत्संग मैंने

इनको कराया।

आप पर दृष्टि गई, आया शरण सब छोड़कर।
दया कीजे मेहर कीजे, लीजे चरणों में लगा॥

तो वह गुरु की मेहर क्या है? पहले बाहर के गुरू के पास जाओ जहाँ से तुमको ज्ञान मिले फिर गुरू तुम्हारे अपने अन्तर ज्ञान स्वरूप है, शब्द स्वरूप है और प्रकाश स्वरूप है। फिर अपने अन्तर चलो फिर इस बात को समझने के बाद बाहर के गुरू का अहसान रह जाता है। जिस प्रकार माँ ने बच्चे को पाला जब हम छोटे थे तो माँ हम लोगों को छाती से लगाती थी, नंगी होती थी, गोद में बैठाती थी। अब हम जवान हो गए, अब माँ छाती नंगी तुम्हारे सामने नहीं करेगी। जब तक तुम अज्ञानी थे माँ के पीछे भगे हुए थे, अब तुमको ज्ञान आ गया अब तुम्हारी क्या ड्यूटी है? जब तक जीवित हो माँ की सेवा करो, माँ के प्रति अपने कर्तव्य को निभाओ और उसकी तकलीफ को देखो। यह तुम्हारी ड्यूटी है। अगर अब मैं यह आश करूँ कि यदि मेरी माँ होती तो मैं उसका दूध पीता और मुझे अपनी गोद में बैठाती। यह नहीं हो सकता क्योंकि मुझे ज्ञान आ गया है। केवल इतनी सी बात है और कुछ भी नहीं। पीछे से केवल गुरू का अहसान रह जाता है। जज्ज साहिब या तुम लोग आते हो मैं तुम लोगों को फकीरचन्द के साथ नहीं बाँधना चाहता। जिन गुरुओं ने बाँधा उनका हाल मैंने देखा, बहुत बुरा हुआ। मैं नहीं बांधना चाहता। तुमको सच्ची बात बता देता हूं कि मेरी समझ में यह बात आई है। हो सकता है जो कुछ मैंने समझा वह सारा गलत हो। मगर दाता ने आज्ञा दी थी कि फकीर! शिक्षा को बदल जाना। अब तकलीफ भी है मगर बाहर जा रहा हूँ। गुरू आज्ञा है।

राधास्वामी दीन हित, भवनिध से बेड़ा पार कर।

भवनिध क्या है? तुम्हारे मन के ख्यालात हैं, मन के विचार, जिन विचारों में हम फँसे हुए हैं। कभी सुखी होते हैं, कभी दुखी

होते हैं, कभी यह कहते हैं, कभी वह करते हैं। तो यह कब बेड़ा पार होगा ? जब तुमको ज्ञान होगा, ज्ञान तुम कब प्राप्त कर सकते हो ? जब तुम्हारा शरीर स्थिर और मन स्थिर हो।

तन थिर मन थिर सुरत निरत थिर होए।

यह जो अभ्यास कराया जाता है यह लक्ष्य पद नहीं हैं यह ज्ञान को प्राप्त करने के लिए है। अभ्यास लक्ष्य पद नहीं है। अभ्यास करने के बाद मन चित की वृत्तियां ठहर जाती हैं। आनन्द भी मिलता है। उस ठहराओं के बाद एक समझ आ जाती है। ठहराओ से किसी वस्तु को समझने की शक्ति प्राप्त हो जाती है। बस इतना ही अभ्यास का भेद है बाकी रहा अनुभव कि मैं कौन हूँ, इस अनुभव को कोई ध्यान नहीं कर सकता, यह तो जिसको अनुभव होता है वही जानता है। जिस प्रकार गुड़ मैं खाऊँ तो मुझे स्वाद आता है। दूसरे को मैं स्वाद नहीं बता सकता। यही कहूँगा कि मीठा है या दूसरे को गुड़ दे दूँ वह खाकर समझ जाएगा कि हाँ मीठा है।

यह है मेरी बन्दना संसार से मुख मोड़कर।

आहा ! बन्दना कब की ? संसार से मुख मोड़कर। संसार क्या है जानते हो ? सम और सार। संस्कृत में म का न बन जाता है। सम कहते हैं बराबर को सार कहते हैं असली चीज को। असली चीज कौन सी है ? असली चीज तुम हो। तुम्हारे सामने जो कुछ नजर आता है आँख खोलकर या आँख बन्द करके जो कुछ भी तुम देखते हो यह सारा संसार है। सम, सार। संसार तुम्हारी जात है हम उस मालिक की अंश हैं। सार हम हैं, तुम हो। तुम्हारे सामने जो कुछ भी आता है, जाग्रत में, तुम देख रहे हो, मैं देख रहा हूँ जो मेरे सामने आता है यह सब संसार है। आँखें बन्द करता हूँ मेरे सामने स्त्री आती है कोई और शक्ल आती है बाग आता है या ख्यालात और विचार आते हैं यह क्या है ? संसार है। तो इस संसार से पार जाने का क्या उपाय है ? पहले सतसंग वह भी किसी निर्बन्ध

पुरुष का, फिर साधन। साधन और सतसंग दोनों साथ साथ लेने चाहिये। फिर जब अनुभव हो जाता है किसी चीज की आवश्यकता नहीं रहती। आज संसार का अर्थ मैंने आपको बता दिया। हम वास्तव में जो है, जो असली सार वस्तु हमारे अन्तर है, उसके सामने जो कुछ भी आता है, अच्छे दृश्य या बुरे दृश्य, प्रकाश या जो कुछ भी सामने आता है अन्तर में अभ्यास करते सब मेरा संसार है, आपका संसार है। हम लोग इस संसार में फँस जाते हैं। आज अभ्यास करने लगे तो चाँद आ गया. सूरज आ गया कल को नहीं आया तो रोते हैं कि हाय ! आज अभ्यास नहीं बना, आज चित की एकाग्रता नहीं हुई, आज गुरू के दर्शन नहीं हुए। यह है क्या ? संसार ही है। तुम चाहते थे यह हो जाए वह हो जाये। नहीं इस वास्ते तुम दुखी होते हो।

सबको राधास्वामी

———

खोज

ढूढ़ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूं।
मैं न काशी हूं न मथुरा, मैं न गिरि कैलास हूँ ॥
तू हुआ मेरा तो मैं भी, देख तेरा बन गया।
कर भरोसा मेरा मैं ही, तेरी सच्ची आस हूँ ॥
तेरे भीतर मेरी बैठक, आँख से ले देख अब।
मैं नहीं पृथ्वी की मूरत, मै नहीं आकाश हूं ॥
किस भरम में है पड़ा, निरभ्रान्त चित से शान्त हो।
आप मैं हूं योग युक्ति, आप शब्द अभ्यास हूँ ॥
राधास्वामी नाम ले और नाम में विश्राम ले।
सुख ले और आनन्द ले, मुझसे मैं ही सुख राशि हूँ ॥

—०—

* सतसंग *

मानवता मन्दिर होशियार, २२-११-७७

शब्द पढ़ा गया—

मंगलम गुरुदेव मूरती, मंगलम पद पंकजम ।
मंगलम अव्यक्त अनुपम, मंगलम भव गंजनम ।
मंगलम धुरपद निवासी, मंगलम सत् आसनम ।
मंगलम निर्वाण सदगते, मंगलम जन रंजनम ।
मंगलम ज्ञान स्वरूपम, मंगलम आनन्द रूपं ।
मंगलम चैतन्य सदनम, मंगलम सत सत्य रूपं ।
मंगलम योगिनं माया नीत, मंगलम दायकम ।
मंगलम गम गुन रहित, अपरोक्ष परोक्ष निवासनम ।
मंगलम गमकास ज्ञाता, मंगलम भव नारानम् ।
आदि कारण मूल कारण, मध्य आदि अनन्त हो ।
मंगलम करुणा सदन, शुभ ताव परम जगत प्रभो ।
आप प्रगटे इस जगत में, जीव काज सुधारने ।
शब्द नाव बनाम सुन्दर, जीव दुखिण उभारने ।
शब्द तन मन कर्म वाणी, सब ही अर्पण लीजिये ।
मैं हूं शरणागत तुम्हारा, दास अपना कीजिये ।
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जय सदा ।
त्याग जग के महा फंदे, पाऊं भक्ति संपदा ।

राधास्वामी !

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । राम कृष्ण को अवतार समझ कर पूजते थे । राधास्वामी मत वालों ने कृष्ण, राम तथा ऋषियों को किसी को भी काल व माया से मुक्त नहीं बताया और अपने मत को सबसे ऊँचा बताया है । जैसा इस शब्द में भी बताया गया है ।

यदि संत मत की कोई महानता है तो वह यह शब्द योग बताता है।

कल मैंने साधु आश्रम से छपी तथा श्री सतराम बी० ए० द्वारा लिखी गई (आवागमन की पहेली) किताब, पढ़ी। इस किताब में बतलाया गया है कि आवागमन सत्य है और इसे कई सच्ची घटनाओं से सिद्ध किया गया है। जो लोग मरकर जन्में तथा जिन्होंने अपने पूर्व जन्म के सच्चे वृतान्त इस जन्म में देश विदेश में बताये इस किताब में लिखे हैं। मेरे मस्तक पर पुस्तक का बड़ा प्रभाव पड़ा किन्तु इस किताब में एक कहानी एक बूढ़ी औरत की है। उसे साधारण बुखार था। उसने रात को बारह बजे अपने लड़के से कहा कि मैं अब मर जाऊँगी। उसकी बात का उसके लड़के को विश्वास नहीं आया तो उसने लड़के को कहा कि तेरा पिता मुझे लेने आया है। यह बात उस बूढ़ी महिला ने कही। मैं नहीं मानता क्योंकि कई कहानियाँ मेरे बारे में भी प्रचलित हैं कि मरने वालों को मैं लेने गया किन्तु मैं तो जाता नहीं। क्योंकि मैं नहीं जाता इसलिये उस बूढ़ी स्त्री का पति भी उसे लेने को नहीं गया। यह उस बूढ़ी का संस्कार ही था। मैं रात को सोचता रहा। क्या कोई उपाय है जन्म मरण से बचने का ?

जब तक हमारा मरते समय संबन्ध मानसिक रूप से किसी भाई, पुत्र माया या गुरू से या गुरु के आश्रम से भी है जन्म मरण से हम बच नहीं सकते। विज्ञान के सिद्धान्त से भी यही सिद्ध हुआ है और मैं कहता हूँ कि वासनाओं के कारण आत्मा पर भार आता है और यह भार जन्म लेने का कारण बनता है। वह भार आत्मा को ऊपर नहीं जाने देता। यह प्रेम भी बंधन है। बाबा सावन सिंह जी महाराज कहा करते थे। जो हरद्वार से प्रेम करेंगे वे हरिद्वार की मछलियाँ बनेंगे। इसी प्रकार मैं कहता हूं जो होशियारपुर से प्रेम करेंगे वे होशियारपुर में जन्मेंगे संतमत की वाणी में राय सालिग

राम साहिब ने भी कहा है कि अन्त समय में फिल्म चलती है। इसलिये सिद्ध हुआ कि किसी से प्रेम भी आवागमन का कारण होता है।

मैं जो कुछ कह रहा हूं आप लोगों को नहीं अपनी आत्मा को कह रहा हूं। मैं राम कृष्ण और दातादयाल जी महाराज को प्रेम करता रहा हूं उनके ध्यान में मस्त रहता था। अब लोग मेरा ध्यान करते हैं। जो ध्यान करते हुये मरते है उनका भी आवागमन होगा। आवागमन से बचने का मार्ग है शब्द का साधन जिसे शब्दयोग कहा गया है। मरने के पहले यदि मरने वाले भी सुरत शब्द में लीन रहे तो ही आवागमन से बच सकते हैं। यदि यह सचाई न होती तो मैं इस संतमत को जिसमें राम, कृष्ण, वशिष्ठ आदि सभी का खंडन है इसे कभी न मानता। मेरा दाता पर तो विश्वास था उन्हें मैं छोड़ नहीं सकता था। उस विश्वास द्वारा समय आने पर मुझे यह समझ आई और यह सत्य है। यदि मैं मन्दिर से, दाता को देह से, या राधास्वामी मत से भी बँधा रहूँगा तो में प्यार या ध्यान में फँसा रहूँगा और आवागमन से बच न सकूंगा।

जिस गुरु की शब्द में प्रशंसा की गई है। वह गुरु इस अवस्था में रहता है। सबसे मुक्त (un attached) है। वह लोग गुरू नहीं जो लोगों को अपने पीछे लगाते हैं। चेले बनाते हैं चेलों का धन ठगते हैं। यह सब पाखण्ड है। मैं उनकी भी निन्दा नहीं करता क्योंकि वे जानते ही नहीं कि सचाई क्या है ? गुरुओं के पास जाने वाले भी तो धन सन्तान व साँसारिक वासनाओं के लिये ही जाते हैं। परमार्थ के लिये कौन जाता है।

आप प्रगटे इस जगत में जीव काज सुधारने।
शब्द नाव बनाय सुन्दर, जीव दुखित उवारने ॥

जब से यह पुस्तक पढ़ी सोचता रहा हूं जब ध्यान आता है जन्म

होते हैं तो मेरी आत्मा काँपती है। मैंने गुरु बनके देखा, चेला भी बनके देखा। सच्चा गुरु शब्द ही है, शब्द ही चेला है। न मैं अपना अनुभव कहने का प्रण करता न मैं यह काम करता न मन्दिर बनाता मैं फँस गया हूँ, मै दुखी हूँ। किसी ने बेटे पोते के लिये बाग बनाया, किसी ने चेलों के लिये मन्दिर या डेरा बनाया, बताओ दोनों में क्या अन्तर है। मेरा यह कर्म है और इसमें मैं समझता हूं मेरा वश नहीं। किसी के साथ दोस्ती (Attachment) न रहे यह जरूरी है। गुरु से भी प्रेम पार नहीं जाने देगा। क्या पता आपको यह संसार अच्छा लगता हो। मेरी दृष्टी में यह दुनियाँ दुख की खान है।

राधास्वामी।

—०—

सतसंग

मानवता मन्दिर होशियारपुर, ता० २८-११-७७

संत कबीर का शब्द पढ़ा गया —

भाई कोई सद्गुरु संत कहावै। नैनन अलख लखावै।
डोलत डिगे न बोलत बिसरे जब उपदेस द्रढ़ा दै।
प्राण पूज्य किरियाते न्यारा सहज समाधी सिखावै।
द्वार न रूँधे पवन न रोके नहीं अनहद समझावै।
यह मन जाय जहँ लग जब हों परमातम दरसावै।
करम करे निः करम रहै जो ऐसी जुगत लखावै।
सदा विलास जास नहीं मनमें भोग में जोग जगावै।
धरती लागी अकास हूँ लागै अधर मढ़ैया ध्यावै।

सुना सिर पर के सार सिलावर आसन अन्दर जमावै।
भीतर रहा सो बाहर देखे दूजे दृष्टी न आवै।
कहत कबीर बसा है हंसा आवागमन भ्रमरावै॥

मैंने संत कबीर का यह शब्द सुना। मेरी नियत सचाई पसंद है। विचार आया कि मैं भी अपने को स्वयं को सतगुरू कहता हूँ। कबीर तो कहता है कि वह संत सदगुरू हो सकता है जो अलख को लखादे। यह है कबीर की परिभाषा संत सद्गुरू की।

भाई कोई सद्गुरू संत कहावै। नैनन अलख लखावै।
डोलत डिगै न बोलत बिसरै। जब उपदेस द्रढ़ावै।
प्राण पूज्य किरियाते न्यारा सहज समाधि सिखावै।

आंखों से अलख को दिखाने वाला ही सदगुरू है। ऐसी सन्तों की वाणियों ने सारी आयु मुझे खोज करने को विवश किया। काश! सन्त कबीर होता तो मैं उनसे पूछता कि कैसे अलख लखाया जाता है? यदि वो होता तो उत्तर देता कोई और महात्मा जो गुरू बने हुये हैं वे ही बताते। मैंने क्या समझा? जब से मुझे यह पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता हूँ, जो जाता है वह मैं नहीं होता हूँ। साधन करते समय जो वस्तु प्रकाश को देखती व शब्द को सुनती है वो है किन्तु दिखाई नहीं देती वह अलख है। ऐ मानव! तू किस खुदा या राम को ढूंढ़ता है। राम या खुदा है किन्तु उसे कोई देख नहीं सकता। मैं इस वाणी का यही भाव समझा हूँ।

भाई कोई सतगुरु सन्त कहावै।
डोलत डिगे न बोलत बिसरै जब उपदेस द्रढ़ावै।

ऐ संतों! ऐ कबीर!! तुम्हारी वाणियों ने मुझे सारी आयु खोज करने को विवश किया। मैंने प्रण किया था कि जो मुझे अनुभव होगा कह जाऊँगा। मेरी आयु इसी खोज में गुजरी है। कबीर कहते हैं—

डोलत डिगै न बोलत विसरै जब उपदेस द्रढ़ावै।
प्रेाण पूज्य किरिया से न्यारा सहज समाधि सिखावै।

मैं अब कैसे डोलूँगा अब जब मुझे पूरा पूरा विश्वास हो गया है कि सचाई यह नहीं यह है। कबीर का तो पता नहीं उसे क्या विश्बास हुआ था? मैं समझा हूँ कि एक तत्व है, उसमें हरकत आती हैं— वुलबुला बन जाता है बनकर मिटकर उसी में समा जाता है। इस अनुभव के आधार पर ही कहता हूं जो कहता हूँ वह मेरा निश्चय है। देख देखकर कि वह अवस्था अलख अगम और अनामी है—हम सभी उसका अंश हैं— यही मैं समझा हूँ। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तूने क्या किया संत सद्गुरू अपने को कह करें? मेरे कर्म मैंने भोगे और क्या करना था? सद्गुरू की ड्यूटी मैं करता हूँ।

करम करै निः करम रहै जो ऐसी जुगत लखावै।
सदा विलास गास नहीं मनमें भोग में जोग जगावै।
प्राण पूज्य किरिया से न्यारा, सहज समाधि सिखावै।

जो मैं कहल कहता हूँ यह मैंने समझा है। सन्त कबीर ने, दातादयाल जी ने या स्वामी जी ने क्या समझा मुझे पता नहीं। मैंने समझा है मेरी जो हस्ती है उसे ढूढ़ने निकली थी पहले रूप देखा करता था वह तो सिद्ध हो गया कि माया का है, कल्पित है रूप धूर गया, आगे गया वहाँ प्रकाश और शब्द है। अब उसे ढूढ़ता हूँ जो प्रकाश को देखती व शब्द को सुनती है वह है अनामी-अलख या अगम इस निश्चय से मैं अब डोलता नहीं व यही सार बताता है। कबीर भी यही कहता है।

धरती त्यागी अकासहु त्यागै अधर पढ़ै या ध्यावै।
सुन्न सिखर के सार सिला पर आसन अचल जमावै।

और कहा है–

द्वार न रूँधे पवन न रोकै, नहीं अनहद अरुझावै।
यह मन जाय जहाँ लग जब ही परमातम दरसावै।

सद्गुरू वह है जो नाम शब्द या अनहद में भी नहीं उलझाता मैं वहाँ पहुंच जाता हूँ जहाँ शब्द, प्रकाश. रूप कुछ नहीं होता है। मैंने क्या किया है जीवन में ? इन वाणियों ने मुझे पागल बनाया था माना इसी ज्ञान के कि मेरा रूप लोगों के काम करता है और वास्तव में मैं नहीं जाता। मेरी खोज को सहायता मिली।

यह मन जाय जहां लग जब हीं परमातम दरसावै।
करम करै निः करम रहै जो ऐसी जुगत लखावै।
सदा विलास तास नहिं मनमें भोग में जोग जगावै।
धरती त्यागी अकासहु त्यागै अधर मढ़ैया छावै।

अब मैंने एक सज्जन के पत्र का उत्तर चार पेज में दिया उसमें यही कहा कि उस तत्व का किसी को अन्त नहीं मिला जो कुछ हो रहा है प्रकृति का खेल है, जिसको यह ज्ञान हो जाता है वही सद्गुरू की ड्यूटी पूरी करता है। इस ज्ञान के आधार से वह सद्गुरू कर्म तो करता है किन्तु वह यह जानता है कि कोई ताकत सब करवा रही है। कर्म करते हुए भी वह कुछ नहीं करता। सब उसका ही खेल है अपना कुछ भी नहीं तो बेफिक्री, बेगमो, प्रसन्नता ही रहती है।

सदा विलास गास नहीं मनमें भोग में जोग जगावै।
धरती त्यागी आकासहु त्यागै अमर मढ़ैया छावैं।
सुन्न सिखर के सार सिला पर आसन अचल जमावैं।
भीतर रहा सो बाहर देखे दया दृष्टि नहीं आवै।

इस वाणी का भाव मैंने अनुभव किया है। मान को भूल जाना, देह को भूल जाना, वह है अलख, उस अवस्था में मन नहीं होता अभी समाधी अवस्था में मैं कहाँ था ? अलख ही में तो था। किन्तु वहाँ मुझसे अभी रहा नहीं जाता वापिस आना पड़ता है। यह मेरे

में कमी है। इसमें मेरा वश नहीं—

भीतर रहा सो बाहर देखे दूजा द्रष्टी न आवै।
कहत कबीर फंसा है हंसा आवागमन मिटावै।

भाई कोई सद्गुरू सन्त कहावै।
ऐसे ज्ञान वाला चिंता नहीं करता घबराता नहीं।

आवागमन के माने कबीर ने क्या समझे मुझे पता नहीं। मैं यह समझता हूं कि मेरा मन जो ढूढ़ता था वह तड़क समाप्त हो गई उसका समाप्त होना मेरा आवागमन समाप्त होना मानता हूँ। इन वाणियों ने मुझे बर्बाद किया या आबाद किया मुझे पता नहीं। जो भाव मैंने इस वाणी का समझा अनुभव भी किया वह आपको कह दिया। मेरी समझ ठीक है या नहीं इसका मुझे पता नहीं। क्या पता मैं गलत होऊं ?

सबको राधास्वामी

—००—

निर्वाण वृक्ष

ले० दुर्गादास 'चमन'

इक देखा वृक्ष अनौखा जड़ ऊपर तना है नीचे को।
पात पात में अद्भुत माया सारा जग भरमाया।
तना वृक्ष की जड़ को खाए कोई समझ न पाया।
नीचे आकर हमने देखा चोट तने को व्यापे।
काट काट के सार समाप्त, मोह ममता के व्यापे।
इक देखा वृक्ष अनोखा जड़ ऊपर तना है नीचे को।

एक अचम्भा और भी देखा वृक्ष में सृष्टि सारी।
सूर्य चान्द हजारों तारे भई सुरत मतवारी॥
यही पुरुष है किसी जगह और बना कहीं पर नारी।
सपष्ट भाव से क्या समझाऊँ माया सब सँसारी।
इक देखा बृक्ष अनौखा जड़ ऊपर तना है नीचे को।
इसी बृक्ष में सार भरा है समझ के साज सजाओ।
नाम दान ले परम पुरुष से अपना काम बनाओ।
सतसङ्ग करो समझकर दृष्टि शिव नेत्र पर लाओ।
पात की इक इक नस से राधास्वामी गाओ।
इक देखा बृक्ष अनौखा जड़ ऊपर तना है नीचे को।

—००—

साध का अंग

कबीर संगत साध की, हरै और की व्याध।
संगत बुरी असाध की, आठहु पहर उपाध॥
निर्बैरी निःकामना, स्वामी सेती नेह।
विषयों से न्यारा रहै, साधु का मत एह॥
सिंघों के लेंहड़े नहीं, हंसों की नहिं पाँत।
लालों की नहिं बोरियां, साधु न चलें जमाँत॥
सिंह संध का एक मत, जीवत ही को खाय।
भाव हीन मृतक दशा, ताके निकट न जांय॥
रवि को तेज घटै नहीं, जो घन जुड़े घमण्ड।
साध वचन पलटै नहीं, पलट जाय ब्रह्मण्ड॥
साध कहावन कठिन है, ज्यों खाड़े की धार।
डिगमगे तो गिर पड़े, निश्चल उतरे पार॥

परमदयाल जी, महाराज के साथ जाने वाले तीन साथियों की समय सारणी

स्थान	दिनांक	समय	गाड़ी नं०	स्थान	समय	दिनाँक
होशियारपुर से	३०-१-७८ को	१६-४० P.M.	३४, Down कश्मीर मेल	दिल्ली	५-०० A.M.	३१-१-७८
दिल्ली से	३१-१-७८ को	१२-४०	१५, up चेतकएक्सप्रेस	भीलबाड़ा	३-४० A.M.	१-२-७८
भीलवाड़ा से	३-२-७८ को	२२-५७	१६ D. चेतक एक्सप्रेस	अलबर	१०-१३ A.M.	४-२-७८
अलबर से	६-२-७८ को	१०-२०	Do	दिल्ली	१४-०५ P.M.	६-२-७८
नई दिल्ली से	६-२-७८ का	१६-३० P.M.	१६ D. जी. टी. एक्सप्रेस	काजीपेट	२१-०५ P.M.	१०-२-७८
सिकन्दराबाद से	१८-२-७८ को	२०-५५ P.M.	३२D. बम्बई एक्सप्रेस	बम्बई बी.टी.	१३-५० P.M.	१६-२-७८
बम्बई से	२६-२-७८ को	६-४० A.M.	२७ up दादर वाराणसी एक्सप्रेस	कटनी	२-३५ A.M.	२७-२-७८
कटनी से	३-३-७८ को	२२-२५	२८ D. दादर वाराणसी एक्सप्रेस	इटारसी	४-५५ A.M.	३-३-७८
इटारसी से	५-३-७८ को	१४-०० P.M.	५७ up अमृतसर एक्सप्रेस	भूपाल	१५-३८	५-३-७८
भूपाल से	७-३-७८ को	६-३० A.M.	३४ Down	उज्जैन	१०-५७ A.M.	७-३-७८
इन्दौर से	१०-३-७८ को	१६-५० P.M.	७२ D. २३ up जनता एक्सप्रेस वाया रतलाम	दिल्ली	१२-२५ P.M.	११-३-७८
दिल्ली से	१७-३-७८ को	२०-५० पर	३३ up काशमीर मेल	होशियार	६-२५ A.M.	१८-३-७८

सत्संग

हुजूर परमसन्त परम दयाल पं० फकीरचन्दजी महाराज

मानवता मन्दिर होशियारपुर २७-११-७७

आली री गुरु भक्ति बिना, नर जीवन निष्फल ।
मानुष तन का भक्ति है भूषण, प्रेम प्रीति सिंगारा ॥
श्रद्धा दया क्षमा चित्त ताड़े, सूझे पर उपकार ।
बुद्धि मन सब हो निर्मल ॥
काम क्रोध और लोभ मोह मद, त्याग डाह हंकारा ।
जो निष्काम करे गुरु भक्ति, सूझे ज्ञान विचारा ॥
फँसे नहीं जग के दलदल ॥
परमारथ के मग में पग धर, सुधर जाय व्यौहारा ।
लोक में यश परलोक में आनन्द, जीवन मुक्ति विहारा ॥
काल माया करम निर्मल ॥
जीते जी तन रहते गावे, निज स्वरूप का दर्शन ।
जब यहां दर्शन तत्व प्राप्त हो, आगे भी यही लक्षण ॥
मिला मानुष तन का फल ॥
राधास्वामी गुरु ने मौज दिखाई, सतसंग सार सुभाय ।
अपनो आंखें देख लिया सत, भक्ति मुक्ति का सार ॥
भया संत मत में निश्चल ॥

राधास्वामी । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि तुमने गुरु भक्ति को क्या समझा और तुम्हें गुरु भक्ति से क्या मिला ? पहले तो मैं गुरु भक्ति को जानता ही नहीं था । मैं छोटी आयु से राम, कृष्ण ईश्वर को मानने वाला था । मेरा अनुभव मुझे एक दृश्य द्वारा दाता-दयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गया । उन्होंने मुझे यह गुरुमत दिया क्योंकि इसमें सबका खण्डन था इस

लिये मैं इसे सहन न कर सका। दातादयाल जी महाराज से मेरा विश्वास टूटता नहीं था उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। दातादयाल जी महाराज ने कहा था कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं अपनी आत्मा से पूछता रहता हूँ कि फकीरचन्द ! क्या तू किसी के लिए कुछ कर सकता है ? मैं कुछ नहीं कर सकता, आदमी का अपना विश्वास श्रद्धा काम करता है। यह मेरे जीवन का अनुभव है। मैंने गुरुमत को क्या समझा ? गुरू नाम है समझ विवेक और ज्ञान का। मानव इस संसार में जन्म लेता है अगर उसके माँ बाप भाई उसके साथ बातें ही करें तो उसे बुद्धि नहीं आयेगी। राजा भोज के समय इस बात की छानबीन की गई थी कि पहले पैदा होने वाले लड़के को यही शिक्षा दी गई दूसरे के पैदा होने पर उसे अपने मिलने वालों से अलग रखा गया। माँ जाती थी और दूध पिलाकर वापिस आ जाती थी परन्तु उससे बोलती नहीं थी। वह केवल आई आई करके रह गया। दूसरा चतुर हो गया। हमें बाहर के प्रभावों से समझ बुद्धि और ज्ञान आता है। गुरु नाम है समझ-विवेक और ज्ञान का चाहे संसार का ज्ञान हो चाहे परमार्थ का और चाहे विज्ञान का। बाहरी प्रभावों के बिना (Extexnal effects) किसी को कुछ नहीं आ सकता।

मैं ईश्वर पूजा करता था, वह क्यों करता था ? क्योंकि मैंने अपने मां बाप और पूर्वजों को पूजा करते हुए देखा था अगर मैं उनको न देखता तो मैं ईश्वर परमेश्वर को भी न मानता। तो एक गुरुमत यह है कि हमें जो कुछ मिलता है बाहर के प्रभावों से मिलता है। किसी बाहर के प्रभावों का असर कुछ पड़ता है किसी पर कुछ। उदाहरणतया स्वामी दयानन्दजी ने जो कुछ सीखा गुरु से सीखा। उनका गुरु कौन था ? शिवजी की

मूर्ति। जब उन्होंने शिवजी की मूर्ति पर चूहे को चढ़े हुए देखा तो उन्हें समझ आगई कि मूर्ती का कोई अभिप्राय नहीं, ज्ञान होगया। बस इतना ही ज्ञान है। गुरु बिना जीवन कुछ नहीं। जीवन अकार्थ है—

आली री गुरु भक्ति बिना, नर जीवन निष्फल।

भक्ति कहते हैं किसी के साथ बैठना, सगत करना और उसका मान करना। हम जो कुछ यहाँ सीखते हैं किसी न किसी से सीखते हैं इसलिए गुरु एक तत्व है मगर सन्तों के मार्ग में गुरुमत सागर से पार करता है—

मानुष तन का भक्ति है भूषण प्रेम प्रीति सिंगारा।
श्रद्धा दया क्षमा चित बाढ़े, सूझे पर उपकारा॥
बुद्धि मन सबहो निर्मल॥

सन्तों के मार्ग में गुरु भक्ति क्या है? जो इस शब्द में आया है। एक आदमी अगर काम प्रीति से गुरु भक्ति करता है और घरवालों से घृणा द्वेष करता है तो यह गुरु भक्ति नहीं है। जब तक हम पहले अपने घर में प्रेम प्रतीत को नहीं अपनायेंगे तुम लाख यत्न करो कि गुरु तुम्हें मजल पर पहुँचा देगा बिलकुल गलत है। संत मत में गुरु को प्रेम रूप कहा गया है कहीं वह समुद्र रूप है, कहीं दरिया, कहीं नहर और कहीं बुन्द रूप है। बुन्दरूप तुम्हारा घर है। हम जितने घर या देश के आदमी हैं अगर हमारा आपस में प्रेम नहीं, द्वेष है तो तुम लाख बाबा फकीर या किसी गुरु के चेले बन जाओ तुम्हारा मन शुद्ध और निर्मल नहीं हो सकता अर्थात मानव बुद्धि निर्मल नहीं हो सकती। ये शर्तें हैं। जिनकी बुद्धि निर्मल नहीं है वह सच्चा ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते जिनकी बुद्धि निर्मल है वहीं इस बात को समझे योग बनेंगे मैं जो कुछ कहता है अपने अनुभव के आधार पर कहता हूं अगर स्त्री को पति पर विश्वास नही और पति को स्त्री पर विश्वास नहीं, स्त्री से प्रेम नहीं बाप को बेटे पर विश्वास नहीं, बेटे को बाप पर विश्वास नहीं तो दिल साफ नहीं होगा जो इच्छा करलो।

विश्वास और दया का क्या भाव है ? तुम्हारे छोटे बच्चे हैं उनको तो पता नहीं कि वे ठीक कर रहे हैं या गलती पर हैं तुम उनको मारती हो क्या तुम दया करती हो ? क्या तुम में दया आगई ? तुममें दया नहीं आई । सास बहुओं के साथ कैसा बर्ताव करती हैं, बड़े भाई छोटे भाई के साथ क्या व्यवहार करते हैं । मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा किसी बात का दावा नहीं करता । जब तक मानव जीवन अमली (क्रियात्मिक नहीं है वह लाख सिर पटक कर मर जाये उसे मुक्ति नहीं मिल सकती और न हीं अवागवन के चक्कर से छुटकारा मिलेगा । हम गुरु दूसरे गुरुओं से घृणा द्वेष करते हैं जैसे कि मैं अगर व्यास आगरा या किसी दूसरे गुरु से घृणा राग द्वेष करता हूँ, तो लाख मैं अपने आपको परम सन्त कहूं मेरे मन में शान्ति नहीं आसकती, इसलिये मानव जीवन में मन को निर्मल बनाने के लिये ये शर्तें आवश्यक है—

मानुष तन का भक्ति है भूषण, प्रेम प्रीति सिंगारा ।
श्रद्धा दया क्षमा चित बाढ़े, सूझे पर उपकारा ।।

बुद्धि मन सब हो निर्मल ।

दूसरों का परोपकार करना, किसी दुखिये की सहायता करना, घर में शान्ति रखना और एक दूसरे पर विश्वास रखना ये सब बातें मन को निर्मल करने के लिए आवश्यक हैं । जिस घर में शान्ति नहीं, जिनके घरों का वातावरण अच्छा नहीं वे घर छोड़कर चले जाते हैं, उनमें से कोई भी मंजल पर नहीं पहुँचता । ये सब गलती करते हैं । कोई आदमी अपनी रहनी बताता है । इन गुरुओं और महात्माओं को पूछो जो नामदान दिया करते हैं कि इनके साथ क्या बीतती है । इनका दिल कैसे कैसे विचार उठाता रहता है । मैं इतनी सच्चाई पर चलने वाला गिर जाता हूँ । मेरी आयु इस समय ६१ साल होगई यह मन मुझे अब भी मार देता है तुमको क्या कहूँ । एक आदमी बाबे फकीर को दस या दो सौ रुपया देता है, मानवता मन्दिर का एक कमरा भी बनवा देता है वह गुरुभक्त नहीं है ।

गुरु भक्त वह है जिसमें प्रेम प्रीति है वह प्रेम केवल गुरु की देह के साथ ही नहीं बल्कि पहले अपने घरवालों के साथ होना चाहिये जहां जहाँ तुम रहते हो वहाँ सबके साथ प्रेम होना चाहिये। जब तक तुममें यह गुण नहीं आजाते तुम्हारी बुद्धि निर्मल नहीं हो सकती जब तक बुद्धि निर्मल नहीं हो जाती आप सन्त मत के सूक्ष्म मार्ग को नहीं समझ सकते। मैं स्वयं इतना समय न समझ सका आपको सचाई बता रहा हूं। पक्षपात मुझमें भी था मैं झूट नहीं बोलता कुत्ते भक्ति मुझमें भी थी। मैं दाता दयाल से प्रेम करता था, मेरे छोटे भाई ने भी मुझे देख कर नाम ले लिया, मेरे बाप को बहुत क्रोध आया उन्होंने पाँच दस गालियां तो मुझे निकालीं और दस पंदरह दाता दयाल को दीं। मुझे बड़ा क्रोध आया, मैंने डंडा उठाया हाथ में पकड़ कर कहा, 'पिताजी अब गाली मत निकलना नहीं मेरे गुरु महाराज को कुछ कहना वरना मैं अपना सिर फोड़ लूँगा।' अब मैं सोचता हूं कि उस समय मैंने गलती खाई थी। यह प्रारम्भ में कुत्ते भक्ति होती है मगर अगर गुरु कोई सियाना हो तो इस कुत्ता भक्ति को दूर कर सकता है दूसरा नहीं कर सकता।

मुझे याद है जब १९२० में मैं आरती करने गया तो दाता दयाल ने मेरे नाम कुछ शब्द लिखे और उनको तोफाये दरवेश नामी किताब में छपाया मुझे कहा भूमिका लिख दो। मैंने भूमिका पक्षपात में आकर लिख दी। उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा सारी भूमिका काट दी और नीचे लिखा (Have reverence for the past souls and have reverence for the present souls इसका भाव यह है कि जो इस ससार से चले गये हैं उनका मान करो और जो इस संसार में जीवित हैं उनका भी मान करो। वह गुरु थे, उन्होंने मेरे इस अवगुण को बड़ी कठिनता से दूर किया। दूसरा उदाहरण सुनिये! मैं अपनी पत्नी से प्रेम नहीं करता था। मैंने अवकाश लेकर लाहोर जाना था तो दाता दयाल ने लिखा तुम जब तक अपनी पत्नी को साथ न लाओ आप लाहौर नहीं आसकते। मैं अपनी पत्नी को साथ लेकर लाहौर गया, मत्था टेका तो पूछते हैं यह

कौन है ? मैंने कहा महाराज ! यह मेरी पत्नी बीवी है, फिर पूछा यह कौन है ? मैंने कहा पण्डित मस्तराम की पुत्र वधू । फरमाते हैं यह कौन है ? मैंने कहा महाराज जी ! पण्डित सरजूराम की लड़की । नहीं यह कौन है ? मैं क्या उत्तर देता, मैंने कहा मैं नहीं समझा कहने लगे, यह मेरी लड़की है अगर इसका अपमान करोगे तो यह मेरा अपमान होगा । फिर डरा दिया अगर तुम अपनी पत्नी से सच्चा प्रेम नहीं करोगे तुम्हारे जो सन्तान होगी यदि यह मर जायगी और तुम्हें बच्चे सम्भालने पड़ेगे और तुम रोओगे इस विधि से उन्होंने मुझे सम्भाला ।

तुम लोग मेरे पास आते हो मैं नहीं चाहता कि तुम गलत ढंग से मेरे नाम का ढिंडोरा पिटवाओ । अपने अपने गुरुओं के पास जाओ मैं यह नहीं कहता कि तुम मुझे गुरू बनाओ मैं तो गुरू बनना महापाप समझता हूं । जब मैं आमल ही नहीं हूँ तो अगर मैं गुरु बनके दूसरों को उपदेश करता हूं तो मैं कपटी और दोषी हूँ । हम लोग गुरुआई इसलिए नहीं करते कि दूसरों का भला हो परन्तु इसलिए करते हैं कि हमारा नाम हो हमारी गद्दी बने और हमें धन आता रहे । बात सच्ची कहता हूँ चाहे कोई अच्छा माने या बुरा—

मानुष तन का भक्ति है भूषण, प्रेम प्रीति सिंगारा ।
श्रद्धा दया क्षमा चित बाढ़े, सूझे पर उपकारा ।
बुद्धि मन सब हो निर्मल ।।

जब तक तुम्हारी बुद्धि निर्मल नहीं हो जाती तुम्हें परमार्थ नहीं मिल सकता, बात को समझ नहीं सकते जैसा सार वचन में लिखा है—

कागल चित दया मन धारो ।
तब परमार्थ का खोज लगाना ।।

काम क्रोध और लोभ मोह मद त्याग डाह हकारा ।
जो निष्काम करे गुरु भक्ति, सूझे ज्ञान विचारा ।
फसे नहीं जग के दलदल ।।

अब संतों ने तो कह दिया लेकिन मेरे जिम्मे यह कर्तव्य है कि शिक्षा

को बदल जाना। काम, क्रोध मोह लोभ और अहंकार न तो आज तक किसी ने मारा और न आगे कोई मार सकता है। जब ये संत गद्दियों पर बैठे तो क्या इनके बच्चे नहीं हुये ? ये कैसे कह सकते हैं कि इन्होंने काम को मारा। अगर कोई इसका उत्तर दे सकता है तो बताये। सन्तमत वालों के गुरुओं का हाल सिवाये स्वामी जी महाराज के देखो और यह भी पता नहीं कि स्वामी जी महाराज को कोई बीमारी हो जिसके कारण उनके घर कोई सन्तान पैदा नहीं हुई दूसरे जिसमें काम नहीं है वह हीजड़ा है सिवाये तालिए बजाने के कुछ नहीं कर सकता। जिसमें क्रोध नहीं उसको हर व्यक्ति फुटबाल बना लेगा। तुम में लोभ नहीं तो तुम जीवन व्यतीत नहीं कर सकते अगर मोह नहीं है तुम बच्चों को नहीं पाल सकते। इनका असली भाव यह है कि ये सूक्ष्म रूप में रहें बेकाबू न हो जायें। इनको कौन रोक सकता है। क्यों ? क्योंकि जिस प्रकार हमारे शरीर के अन्तर विशेष विशेष नाड़ियें चलती हैं उसी प्रकार अगर काम क्रोध लोभ मोह अहंकार हमारे मन से चला जाये तो हमारा जीवन बेकार है हम जीवित नहीं रह सकते। यही दाता-दयाल ने कहा था, 'कि फकीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मुझ कोई भी महात्मा यह बताये कि उसने काम क्रोध मोह लोभ अहंकार को मारा है। जब किसी गुरु का मरने का समय आता है तो वह गद्दी पोते या पुत्र को दे जाता हैं क्या यह मोहवश नहीं है ? जब गुरु गद्दी पर आते हैं तो उनके बच्चे पैदा होते हैं अगर किसी का कारणवश बच्चे पैदा न हों तो काम वश किये कर्मों का पता न लगे लेकिन जब बच्चे पैदा होगे तो फिर वे यह नहीं कह सकते कि वे कामी नहीं हैं। क्या किसी गद्दी वाले या मुझको यह विचार नहीं आता या लालच नहीं आता कि कोई चार पैसे डेरे या मन्दिर को दे जावे तो यह लोभ नहीं अर्थात ऐसे विचार का पैदा होना लोभवश ही होता है। परन्तु ये उचित ढंग से प्रयोग में लानी चाहिए। कभी कभी क्रोध भी करना पड़ता है वरना तुम्हें इस संसार में रहना कठिन हो जायेगा। नेक कमाई करो, परन्तु इसके लिए मैं सन्तों के साथ सहमत नहीं हूं। ये महात्मा लोग संसार को भयानक और रौचक बातें बताकर मूर्ख बनाते हैं। काम

क्रोध मोह लोभ और अहंकार सब रहें लेकिन हर बात का समय होता है। अधिक काम न भोंगा जाये। काम केवल सन्तान पैदा करने के लिए है न कि विषय भोगने के लिए, क्रोध (Self respect) निजी मान प्रतिज्ञा को कायम रखने के लिए है लोभ (जीविका) रोटी कमाने के लिए हैं अगर मोह नहीं है तो बच्चे नहीं पल सकते।

काम क्रोध और लोभ मोह मद, त्याग डाह हंकारा।
जो निष्काम करे गुरु भक्ति, सूझै ज्ञान विचारा।
फँसे नहीं जग के दलदल ।।

निष्काम कर्म का क्या अर्थ है ? तुम गुरु की सेवा बेशक निष्काम करो, लेकिन अपने घरवालों से मोह रखके सेवा करते रहो पुत्र से मोह रखके सेवा करते हो तुम्हें यह फल नहीं मिलेगा यह मेरे जीवन का अनुभव है। निष्काम कर्म आदमी तभी कर सकता है जबकि उसका कोई निजी स्वार्थ न हो संसार में कोई पाप पुन्य नहीं। अपने निजी स्वार्थ के लिए किसी को दुख देना, किसी के साथ हेरा फेरी करना ही पाप है।

दोस्तो ! मैंने गुरू बनके जो कुछ समझा है, अगर यह ठीक है और यदि यही कुछ दूसरों के साथ बीती है तो मैं निर्भय होके कहे जाता हूं कि इन इन महात्मा लोगो ने हमारे साथ धोखा और फरेब किया है। जैसा कि मैंने पिछले सत्संग में कहा था कि सरसोंहेडी के एक आदमी को अधरंग हो गया, उसकी स्त्री नहीं थी घर में लड़की थी, वह घबराई वह मुझे प्यार करती थी, कहती कि बाबा जी मैंने प्रार्थना की आप आ गये आपने कहा तेरा बाप राजी हो जायेगा। उसने अपने बाप से कहा कि बाबा जी ऐसा कहते हैं, वह आये हैं। बाप ने कहा मुझे तो दिखाई नहीं देते। फिर उसने भी मुझे देखा और कहता था कि बीस बाईस दिन जब तक वह स्वस्थ नहीं हो गया मैं उस के साथ रहा। मैं तो गया नहीं और अगर ये दूसरे गुरु भी नहीं जाते हैं तो ये गुरु स्वर्ग में नहीं गये कहीं नर्क में होंगे। सन्त ताराचन्द भी कहते है कि जब वह दोपहर के समय अपने खेत में चने काट रहे थे बाबा जी (बाबा फकीर) भी उनके साथ थे अब जब उनका रूप लोगों अंदर प्रकट होने लगा

तो कहने लगे कि बाबा जी ! मैं अहंकारी हो गया था । आपने बचा लिया आप लोगों को अर्थात गृहस्थियों को इस लूट से बचाना चाहता हूं । अगर मेरी बात पसन्द न आये तो मेरे सतसंग में मत आया करो, मैं आपको बुलाने नहीं जाता । मैं आपको गुरु भक्ति का ज्ञान बताना चाहता हुँ गुरु भक्ति क्या है ? हम लोग रौचक भयानक बातों में आकर लुट गये । किसी ने भी हमें सच्ची बात नहीं बताई अगर बताई भी तो इशारे में—

काम क्रोध और लोभ मोह मद, त्याग डांह हंकारा ।
जो निष्काम करे गुरु भक्ति सूझे ज्ञान विचारा ।
फँसे नहीं जग के दलदल ।।

मैं इससे सहमत नहीं कि तुम केवल गुरू की ही निष्काम भक्ति करो जो भी काम तुम करते हो सब निष्काम होना चाहिए । अपने कर्तव्य का पूरा पालन करो । अपने माँ बाप और स्त्री के साथ अपना कर्तव्य निभाओ । जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता बेशक वह गुरु की निष्काम सेवा करे दस हजार रुपया मन्दिर को दे दे उसका बेड़ा पार नहीं होगा यह Prectical अमली जीवन का पाठ है अगर रुपया देने से तुम लोग सतलोक जाते तो बड़े २ सेठ रुपया देकर सतलोक चले जाते । तुम भूल में हो ऐसा नहीं कि मुझे रुपये की आवश्यकता नहीं है मेरा भी मन्दिर है अगर मैं तुम लोगों की आँखों में मिट्टी डालकर आपसे धन नहीं लेना चाहता । जो आदमी केवल गुरु की ही निष्काम सेवा करता है बाकी जगह स्वार्थ चार सौ बीस और हेराफेरी करता है उसको कोई लाभ नहीं हो सकता । क्यों ? क्योंकि उसका मन निर्मल नहीं होगा ।

काम क्रोध और लोभ मोह मद, त्याग डाह हंकारा ।
जो निष्काम करे गुरू भक्ति सूझै ज्ञान विचारा ।
बुद्धि मन सब हो निर्मल ।।

निष्काम भक्ति से समझ आ जाती है अनुभव हो जाता है जैसे मुझे हुआ । मैं सोचने के लिए विवश हो गया कि सार भेद क्या है ? इसी बात को समझने के लिए दातादयाल जी महाराज ने मुझे यह काम दिया था ।

जब तुम लोग बताते हो कि बाबा जी । तुम हमारे अन्तर प्रकट हुये । मैं सकाज सकाम तो नहीं हूं निष्काम हूं, कि मैं नहीं जाता अगर मैं स्पष्ट वर्णन नहीं करता तो मैं निष्काम नहीं हूं । इस एक बात से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मुझे हकीकत असलियत और सच्चाई का पता चला । मैंने यही प्रण किया था । कौन ब्राह्मण सुन सकता है कि—

"कृष्ण को करबा कैसे कहिए वह तो काम का कीड़ा वेदान्त और सूफी-वाद का खण्डन । मेरा तो मस्तिष्क बिगड़ गया मगर दातादयाल जी महाराज से तो मेरा विश्वास टूटता नहीं था उस समय मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा । अब मैं कहता हूँ कि जो कुछ सन्तों ने कहा बिल्कुल ठीक है । मरते समय मेरा रूप ले जाता है । लोगों के तरह तरह के काम बन जाते हैं मुझे तो पता नहीं होता इससे मुझे सच्चाई का पता लगा । अगर यह ठीक हैं कि इन महात्माओं के साथ भी यही बीती तो इन महात्माओं ने पब्लिक के साथ धोखा फरेब और ठगी की है । कोई मेरे सामने नहीं आता । मेरे सामने सब मानते हैं । भाई नन्दू सिंह जी, हुजूर बाबा सावन सिंह जी, सन्त कृपाल सिंह जी, इन सबने मेरे सामने माना कि वे कहीं नहीं जाते और अब एक और जो सन्त कृपाल सिंह जी की जगह विदेशों में काम करते हैं अपने आपको शानशाहे आलम कहते हैं उन्होंने भी कहा कि मैं नहीं नहीं जाता मैंने पूछा पब्लिक को सच्चाई क्यों नहीं बताते ? कहने लगा ऐसा नहीं करता । मैंने कहा जाओ तुम्हारे वास्ते नरक पड़ा है अगर आप पब्लिक को सच्चाई नहीं बताते तो बच नहीं सकते।

काम क्रोध और लोभ मोह मद, त्याग डाह अहंकारा ।
जो निष्काम करे गुरु भक्ति, सूझे ज्ञान विचारा ।
फँसे नहीं जग के दलदल ।।

वह जग के दलदल में नहीं फँसता । जग क्या है ? एक तो जगत यह दुनिया संसार है । यह हमारा जगत नहीं है हमारे मन के अन्तर जितने विचार भाव संकल्प उठते है यह हमारा जगत है इसमें न फँसना ही दलदल में न फँसना है । मैं इनमें कैसे नहीं फँसता ? क्योंकि मुझे आप लोगों की

कृपा से यह पता लग गया है कि मेरे अन्तर जो शक्लें पैदा होती हैं ये केवल संस्कार हैं असल में है नहीं न लेकिन भासते हैं जिस प्रकार तुम सिनेमा देखते हो, सिनेमा में पर्दे के ऊपर घोड़े दौड़ते हैं, स्त्रियें नाचती है, हवाई जहाज उड़ते हैं क्या असल में हवाई जहाज उड़ते हैं घोड़े दौड़ते हैं स्त्रियें नाचती हैं ? नहीं वे अकस हैं। दया तो दातादयाल महाराज की है लेकिन आप लोगों की कृपा से बिश्वास हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है यह सब माया है।

परमारथ के मग में पग धर, सुधर जाये व्यौहारा।
लोक में यश परलोक में आनन्द, जीवन मुक्ति विहारा।
काल माया करम निर्बल ॥

तुम देखते हो मुझे इस लोक में कितना आनन्द है, किसी चीज की कमी नहीं मान प्रतिष्ठा होती है। इस बात के सिवाय कि मुझे किसी बात का पता नहीं होता और कुछ नहीं कह सकता। तुमको पता नहीं कि सच्चाई क्या है। जो कुछ तुम्हें मिलता है मुझे मिलता है हमारी अपनी ही नीयत और कर्म का फल मिलता है। यह मेरी समझ में आया है हो सकता है कि जो कुछ मैंने समझा हो सारे का सारा गलत हो। दाता ! आपने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना जो कुछ मेरी समझ में आया कह दिया। अगर मैं गलती पर हूँ तो दातादयाल जी महाराज जानें या हुजूर बाबा सावनसिंह जी जाने। बाबा सावन सिंह जी महाराज ने कहा था कि फकीरचन्द मुझसे डेरे के कारण और न संसार सच्च सुनने के लिए तैयार है तू सच्चाई के काम कर जाना मैं तेरा संरक्षक रहूंगा। मैं शिक्षा को बदल जाता हूँ। काम करने को दिल नहीं करता मेरा अपना काम पूरा हो गया।

परमारथ के मग में पग धर, सुधर जाय व्यौहारा।
लोक में यश परलोक में आनन्द, जीवन मुक्ति विहारा।
काल माया करम निर्बल ॥

मेरी बहिनो ! माताओ ! वीरो ! मैं गुरू नहीं हूँ। मैं गुरू बनकर काम करना महापाप समझता हूँ क्योंकि गुरू नाम है सच्चे ज्ञान, समझ और विवेक

का। सच्ची बात कोई सुनने को तैयार नहीं झूठ मुझसे कहा नहीं जाता इसलिए मैं इस काम के लिये योग्य नहीं हूँ मगर आप लोग आ जाते हैं मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। १९०५ से लेकर आज दिन तक लगभग सत्तर पचत्तर साल हो गये मैंने माया को क्या समझा ? काल क्या है ? दयाल, चौथा पद, पाँचवा पद, सहसदल कंवल और त्रिकुटि क्या है ? इसी स्पष्ट में मेरा सारा जीवन बीत गया जो कुछ मैंने समझा वह कहा मगर मैं यह नहीं कहता कि जो कुछ मैंने समझा यही ठीक है हो सकता है मैंने गलत समझा हो मुझे किसी बात का दावा नहीं।

मैं विश्वास पूर्वक कहता हूं कि इन धर्मों, पंथों और गुरुओं ने हम गृहस्थियों को मूर्ख बनाया है। यह बात मैं बड़े उत्साह और पूरी सच्चाई से कह रहा हूं। मैं अनामी धाम से इसी वास्ते आया हूँ कि सन्तमत को साफ कर जाऊं। हम गरीबों को अज्ञान में रखकर बुरी तरह लूटा गया है कोई सच्ची बात नहीं बताता। माया देश क्या है ? काल और दयाल देश क्या है ? इसकी समझ मुझे आप लोगों से आई दया तो दातादयाल जी महाराज की है। जब से मुझे पता लगा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मेरे अंतर जितने विचार भाव पैदा होते हैं चाहे वे परमार्थ के हैं चाहे वे संसार के हैं सब माया हैं जो मेरी या तुम्हारी प्रकाश रूपी आत्मा है वह काल है और जो शब्द है यह दयाल है यह मेरी समझ में आया है। मेरे जिम्मे कर्तव्य था मैंने बड़े उत्साह और सच्चाई से आपको बता दिया। आप लोग आते हैं मैं अपनी भारी जिम्मेदारी को महसूस करता हूं। केवल एक उत्साह वाली बात है कि जब आप लोग अपने विश्वास श्रद्धा से मुझे बना लेते हो मेरे रूप से काम ले लेते हो तो सिद्ध हुआ कि आदमी के मन में शक्ति है तो मेरे मन में भी शक्ति होनी चाहिए। दुखी लोग मेरे पास आते हैं मैं क्या करता हूँ ? सच्चे दिल से चाहता हूं कि ऐ दाता ! ये दुखी लोग सुखी हो जायें। इनकी कामनायें पूर्ण हो जायें। सिवाय शुभ भावना के मेरे पास और कुछ नहीं या जो सतज्ञान या अनुभव मैंने प्राप्त किया है वह बताता हूं। मैं फूंक तो मार नहीं सकता सच्चे दिल से चाहता हूँ कि जिस जिस

इच्छा को लेकर आप लोग मेरे पास आते है वह पूर्ण हो मगर याद रखना अगर बुरी इच्छा रखोगे तो तुम्हारी हानि होगी। मैं संसार वालों को नाम क्यों नहीं देता ? मैं डिगरी होल्डर हूं दातादयाल जी महाराज और बाबा सावनसिंह जी महाराज की आज्ञानुसार जो आदमी राम जपता है, ध्यान करता है घन्टा शख सुनता है उसके संसारी काम हो जाते हैं। कल एक मिलिटरी का आदमी आया हुआ था, कहता था कि घन्टा शंख ही सुनता हूं आगे कुछ नहीं आता मैंने कहा अगर तू घन्टा शख सुनता है तो तेरे सब संसारी काम पूरे होने चाहिए। कहने लगा सब काम पूरे होते हैं। जो आदमी पहली Stage पर अभ्यास करता है, घन्टा शंख सुनता है, गुरु के रूप का ध्यान करता है अपनी जात के लिए उसकी मनोकामनायें पूर्ण होनी चाहिये कोई रोक नहीं सकता यह प्रकृति का नियम है।

दूसरी बात यह है कि मेरे मुँह से सही बात निकलती है जो होने वाली होती है मैं कुछ नहीं करता यह मेरी समझ में आया है। क्यों ? मेरे साथ कई घटनायें बीतीं। अपने घर की घटना सुनाता हूं। मैं फीरोजपुर में बलोराम हकीम के घर ठहरा हुआ था। मेरी विवाहित लड़की और दामाद दोनों वहां आये। लड़की कहती है कि पिताजी पाँच साल विवाह किये हो गये परन्तु अभी तक कोई बच्चा नहीं हुआ, सास जेठानी देवरानी ताहने मारती हैं मैं दुखी हूं। मैंने कहा बेटा तू फकीर की लड़की है बच्चे पैदा करेगी तो दुखी होगी। काहे को कष्ट में पड़ती है, सास और सबको कहने दे। जीवन का कोई भरोसा नहीं। इस प्रकार कहकर मैंने उसे टाल दिया। पन्द्रह मिनट के बाद मेरा दामाद देशराज आया कहता है पिता जी ! मुझे संतान नहीं है। मैंने कहा बहुत सन्तान होगी क्यों घबराता है। अब मैं सोचता हूँ तू ने यह नहीं सोचा कि लड़की को क्या कह रहा है और दामाद को क्या कहा और न ही उस समय मेरे दिल में यह ख्याल आया कि लड़की मर जायेगी। डेढ़ साल के बाद प्रेमप्यारी

मर गई। उसने दूसरा विवाह करा लिया। इस समय उसके बहुत बच्चे है इसलिये मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि सच्चा साधू भी किसी का कुछ नहीं कर सकता। संत अपने लड़कों को ठीक न कह सके थे। माता जी का ३ सिखी किताबों में कहीं भी नाम नहीं आया उनकी अपनी स्त्रियों के साथ नहीं बनती थी। किसी गुरू का जवान लड़का मर गया वह विधवा हो गई। मेरा एक लड़का मर गया, विवाहित लड़की मर गई। एक सन्त के लड़के के विचार अच्छे नहीं थे। उसकी स्त्री से नहीं बनती थी। दातादयाल जी की धाम उजड़ गई, वे सन्त थे धाम को क्यों उजड़ने दिया। क्या धाम उजड़ने के लिये बनाई थी? दोस्तो! मैं आप गृहस्थियों के लिए आया हूं। तुमको इन ठगों, गलत धर्मों, गलत पन्थों और गलत गुरुबाई से बचाना चाहता हूँ। आपको जो कुछ मिलता है तुम्हारी नीयत श्रद्धा और कर्म का फल मिलता है कोई किसी को कुछ नहीं देता। अगर इन सन्तों के पास कुछ होता और ये गुरु कुछ कर सकते होते तो अपना ही कर लेते।

गुरु ने तुमको सच्ची समझ, सच्चा ज्ञान और सच्चा मार्ग बताया है। गुरु तुम्हें शुभ भावना देता है जैसे मैं देता हूँ जो विश्वास करते हैं उनके काम बन जाते हैं और जो नहीं करते उनके नहीं बनते तो मेरे क्या वश।

मैंने आपको बहुत कुछ बता दिया अब एक विधि बताता हूँ जो मैंने अपनायी है अगर तुमसे कुछ नहीं बनता तो हर दिन प्रातः उठ कर सच्चे मन से जिस रूप, विचार और शक्ल में तुम उसे मानते हो, पुकार किया करो कि ऐ दाता! मुझे सीधा मार्ग बता मेरा कल्याण हो। जहाँ तुमने लगातार पाँच छः महीने ऐसा किया प्रकृति तुम्हें अपने आप ऐसी जगह ले जायेगी जहां तुम्हारे मन को शान्ति मिल जायेगी और तुम्हें सब कुछ मिल जायेगा मेरे अनुभव में ये आया है।

मैं नहीं कहता कि तुम मुझे पूजो जिस रूप में, शक्ल में, तुम्हारा विश्वास है पूजो। उसका तो कोई रूप नहीं सब रूप उसके हैं चाहे निराकार में मान लो चाहे साकार में और चाहे शब्द में। अपने आपसे सच्चे दिल से अकेले बैठकर प्रार्थना किया करो कि ऐ दाता! (Lead me to the life thou pleases least) मुझे उस मार्ग पर ले चल जो तुझे पसन्द हो। अगर तुम ऐसा करना आरम्भ कर दो तो जहाँ तुम्हारे मन में सच्चाई आई तुम्हारा काम बन जायेगा। दीन बना करो। उसका नाम दीनदयाल है। दीन तो तुम बनते नहीं, नम्रता तुम में है नहीं तो तुम्हें सुख कहाँ मिलेगा। जहाँ तुम मेरे पास आके अपने दुखड़े रोते हो उस रूप के सामने सच्चे दिल से प्रार्थना किया करो तुम्हारे सब दुख दूर हो जायेंगे। दूसरों के लिये मांगोगे तो शायद काम न बने। एक आदमी कहता कि मेरे लड़के का कुछ बन जाये परन्तु 'लड़का नहीं चाहता तो तुम्हारी प्रार्थना क्या करेगी।

आप लोग आते हैं आप मेरी बहिनें मेरा अब अन्तिम समय है पता नहीं जीवन कितने दिन बाकी है मैं अपने आपको साफ सच्चा रखके जाना चाहता हूँ। मुझे तो गुरु बनने की ख्वाहिश नहीं थी, मैं तो गुरुमत को जानना चाहता था कि गुरुमत के पास क्या अधिकार था कबीर साहिब या स्वामी जी महाराज के पास, कि उन्होंने वेदान्त, सूफीवाद राम कृष्ण जैन बुद्ध ईसाइयों को काल मत कहा अर्थात वहां तक कोई नहीं पहुंचा। मेरा मस्तिष्क हिल गया मैंने सोचा मैं कहां फँस गया। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूँगा जो मेरा अनुभव होगा संसार को बता जाऊँगा। मैं तो अपना कर्म भोगता हूं आप पर कोई उपकार नहीं करता। मैं शुभ भावना देता हूं मालिक करे जिस इच्छा को लेकर आप लोग मेरे पास आते हैं वह इच्छा पूरी हो।

परमार्थ का अभ्यास सबके लिये नहीं है सुरत शब्द योग सबके

भाग में नहीं आता यह तो उन लोगों के लिये है जैसा कि स्वामी जी महाराज ने फरमाया है—

बिषयों से जो होये उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीति नहिं जाके, खोजत फिरे साध गुरु जागे॥

आजकल के गुरुओं ने हमें नाम नहीं दिया बल्कि अपने डेरे धाम और नाम के लिये हमें नाम दिया है। नाम का अधिकारी वह है जैसा कि स्वामी जी महाराज ने ऊपर फरमाया है। दस दस साल की लड़कियों को नाम दे दिया जाता है उनको वैराग्य हो जाता है जब विवाह होता है वे अपने पतियों के घर नहीं रहतीं क्योंकि वहां उन्हें दुख होता है। मेरे पास हर दिन कई लड़कियों के पत्र आते है। यह नाम दान हर व्यक्ति के लिये नहीं है। पता नहीं इन गुरुओं ने ऐसा क्यों किया आप लोगों के लिये है शिव संकल्प अस्तु। अपने विचार को ठीक रखो, अपनी आत्मा को शुद्ध रखो। मने जो समझा आपको बता दिया।

सबको राधास्वामी।

—०—